मूल्य : 20/-

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974U

वर्ष : ३

अप्रैल : २०१९, विक्रमी सम्वत् : २०७६
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९६

अंक : १०

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्॥

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

स्वामी स्वतंत्रानंद
स्मृति : 4 अप्रैल

महाशय राजपाल
बलिदान : 6 अप्रैल

महात्मा हंसराज
जयंती : 19 अप्रैल

गुरुदत्त विद्यार्थी
जयंती : 26 अप्रैल

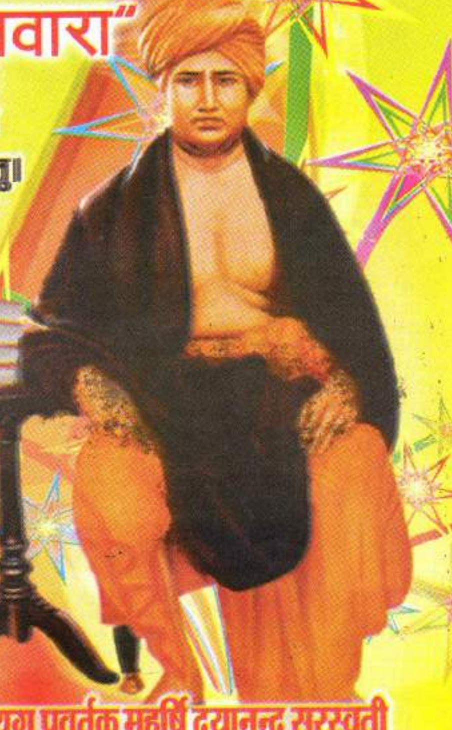
युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

ऋषि जन्मोत्सव पर सम्मानित होते डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के द्वारा राष्ट्रीय वेद सम्मेलन में उद्‌बोधन देते डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में एक शाम रणबाकुरों ने नाम कवि सम्मेलन में सम्मानित होते हुए आर्य कै. अशोक गुलाटी।

एक कार्यक्रम के दौरान आर्य कै. अशोक गुलाटी, आर्य नेता अरुण वर्मा, प्रकाश आर्य, सुरेश अग्रवाल, अरुण अबरोल, जीवन लाल आर्य।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कैं. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974U
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति : 20/- वार्षिक : 250/-
पांच वर्ष : 1100/- आजीवन : 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : लोकतंत्र का सबसे...	2
2.	ओ३म परमपिता का...	3
3.	समर्पित व्यक्तित्व के धनी...	4-5
4.	महान शिक्षाविद महात्मा...	6-7
5.	क्या मूर्तिपूजा वेदानुकूल...	8-9
6.	होली का वास्तविक एवं...	10
7.	शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	सच्चे राम को ईश्वर...	14-15
10.	कैसे हो संस्कार	17
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : दालचीनी कम करेगी...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

लोकतंत्र का सबसे बड़ा महोत्सव लोकसभा चुनाव

भारत देश आज भी दुनिया में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इस देश में विविध भाषा, बोली, मत, मजहब, पंथों से जुड़े लोग रहते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से भी विचारधारा की दृष्टि से भी लोगों में बहुत बड़ा अंतर है। कहीं-कहीं देश में प्रांतवाद का बोलबाला, भाषावाद का बोलबाला, जातिवाद-अलगाववाद के स्वर सुनाई पड़ते हैं। किंतु फिर भी जब प्रश्न राष्ट्रवाद का आता है तो लोग एकजुट, एक साथ खड़े दिखाई देते हैं। विविधता से एकता का रंग भरना हम भारतीयों को खूब आता है। वर्तमान समय में लोकसभा चुनाव भारत में होने जा रहे हैं। अनेक पार्टियां लोकतंत्र के उत्सव में भाग लेती हैं। राजनीति में नैतिकता बहुत पीछे छूटती जा रही है। साम, दाम, दंड, भेद किसी पैतरे से जीत हासिल कर सबका उद्देश्य सत्ता हासिल करने का होता है। साधारण जन जिनकी भी बातें सुनता है सबकी बातें अच्छी सी लगती है। जनमानस किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा नजर आता है। हर दल के नेता बड़े-बड़े वायदे करते हैं। जिनमें अधिकांश झूठे होते हैं, सफेद झूठ बोलते हुए नेता झिझकते नहीं। धन बल, बाहुबल का बेजा इस्तेमाल भी होता है। ऐसे में आवश्यकता है समझदारी से काम लेने की। उपनिषद कहती है ''यदेव विद्या करोति श्रद्धयोप निषादा तदेव वीयेवतर भवति।'' अर्थात ज्ञान एवं श्रद्धापूर्वक किया गया कर्म ही अत्यधिक फलदायी होता है, जो ज्ञान हमें व्यक्ति विशेष के प्रति अत्यधिक श्रद्धावन हो जाता है, अंधा हो जाता है, अंध श्रद्धा हमेशा पतन के अंधकूप में ले जाकर छोड़ती है। इसलिए ऋषि कहते हैं, प्रत्येक कार्य में ज्ञान एवं श्रद्धा दोनों होने चाहिए। मनुष्यता की पहचान ज्ञान है, ज्ञानहीन मनुष्य जानवर है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये कर्म पाशविक होते हैं। उनका परिणाम भी अधर्म होता है। अत: इस महान पर्व में अपने मताधिकार का प्रयोग विवेकपूर्वक करें, भारत के प्रति श्रद्धावान होकर मतदान करें व्यक्ति के प्रति नहीं। जयहिंद!!

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

विविधता से एकता का रंग भरना हम भारतीयों को खूब आता है। वर्तमान समय में लोकसभा चुनाव भारत में होने जा रहे हैं अनेक पार्टियां लोकतत्र के उत्सव में भाग लेती हैं। राजनीति में नैतिकता बहुत पीछे छूटती जा रही है। साम, दाम, दंड, भेद किसी पैतरे से जीत हासिल कर सबका उद्देश्य सत्ता हासिल करने का होता है। साधारण जन जिनकी भी बातें सुनता है सबकी बातें अच्छी सी लगती है। जनमानस किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा नजर आता है। हर दल के नेता बड़े-बड़े वायदे करते हैं। जिनमें अधिकांश झूठे होते हैं, सफेद झूठ बोलते हुए नेता झिझकते नहीं। धन बल, बाहुबल का बेजा इस्तेमाल भी होता है। ऐसे में आवश्यकता है समझदारी से काम लेने की, उपनिषद कहती है ''यदेव विद्या करोति श्रद्धयोप निषादा तदेव वीयेवतर भवति।'' अर्थात ज्ञान एवं श्रद्धापूर्वक किया गया कर्म ही अत्यधिक फलदायी होता है, जो ज्ञान हमें व्यक्ति विशेष के प्रति अत्यधिक श्रद्धावन हो जाता है, अंधा हो जाता है, अंध श्रद्धा हमेशा पतन के अंधकूप में ले जाकर छोड़ती है।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्तजनों को नवसंवत्सर २०७६ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
- प्रबंध संपादक

ओ३म : परमपिता का सर्वोत्तम नाम

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

इसमें जो ओ३म् के तीन अक्षर है वह मिलकर एक ओ३म् समुदाय बनता है। इस परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। अकार से विराट, अग्नि, विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि। मकार से ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ:। गायत्री मंत्र जिसे सविता, गुरुमंत्र भी कहते हैं- ओ३म् भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात्॥ ओ३म् ईश्वर अर्थात् ब्रह्म का मुख्य नाम है।

सृष्टि के प्रत्येक प्राणी में जीवन ईश्वर ने दिया है। भुव:- सर्वज्ञ, स्व: आनंद सवितु: सर्व जगत के उत्पादक। भूर का अर्थ ब्रह्मांड का स्रोत यानी ईश्वर को ही कहा गया है। सवितुर यानी सविता सूर्य की रोशनी को कहते हैं। वरेण्यम का अर्थ है सर्वशक्तिमान और भर्गो कहते हैं क्रांति या तेज को। इस पंक्ति में सूर्य की क्रांति के बारे बताया जा रहा है।

देवस्य देवता को कहते हैं। धीमहि का अर्थ कि हम चिंतन करते हैं। धियो-ज्ञान व बुद्धि, न: हम लोग, प्रचोदयात-जागृत करना। ईश्वर अपनी शक्ति से न केवल जीवों के कष्ट दूर करता है व पूरे ब्रह्माण्ड को चलाने वाला है। भूरभुव: और स्व: शब्दों के आश्रय से हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वरेण्यम अर्थात् हम ईश्वर की परम सत्ता को स्वीकार करते हैं। भर्गो देवस्य धीमहि का उच्चारण कर हम सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारी अज्ञानता व दोषों को दूर करे। धियो यो न प्रचोदयात् से हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारी बुद्धि और मन को श्रेष्ठ और उत्तम से उत्तम कार्यों में लगाए। घृणा और ईर्ष्या का त्याग करें। यदि हमारे मन में दूसरों के प्रति घृणा और ईर्ष्या का भाव रहेगा तो कभी भी हम पर गायत्री मंत्र का सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए हमें अपने मन में घृणा और ईर्ष्या भाव नहीं रखना चाहिए।

यदि हम सच्चे मन और शुद्ध मन से गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तो न केवल सुख बल्कि दुख में भी प्रसन्नचित रहेंगे। जीवन में कई प्रकार की कठिनाइयां, विपदाएं आती हैं लेकिन ऐसी स्थिति में यदि हम धैर्य खो देंगे तो कभी भी हमारे विचार दृढ़ नहीं हो पाएंगे। इसलिए जहां तक हो सके हमें किसी भी परिस्थिति में किसी को भी मानसिक पीड़ा नहीं देनी चाहिए, बल्कि जहां तक हो सके हमें दूसरों के दुखों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

संसार में कई लोगों के ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व देकर दूसरों के दुखों को दूर किया। 'दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले तेरे दुख दूर करेंगे राम...'

यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो वास्तव में यही गायत्री मंत्र का सौन्दर्य है। गायत्री मंत्र वह प्रार्थना है जिससे हमारे विचारों को सही तरह से और सही दिशा की ओर मार्गदर्शन मिलता है। यह मंत्र किसी शारीरिक पीड़ा को ठीक जरूर नहीं कर पाता बल्कि बुद्धि को अच्छे मार्ग की ओर ले जाता है। गायत्री मंत्र ध्यान का एक महत्वपूर्ण साधन है। यदि हम कुमार्ग को त्याग कर सन्मार्ग का असुशरण करना चाहते हैं तो हें प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। यह पवित्र मंत्र हमारे लिए एक धरोहर के समान है जिसका दैनिक जीवन में काफी महत्व है।

संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए सुमार्ग पर चलने के लिए बुद्धि अत्यंत आवश्यक है। बुद्धि द्वारा हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। हम परमात्मा से ऐसी बुद्धि प्रदान करने की कामना करते हैं जो शुद्ध और पवित्र हो तथा हमें सन्मार्ग में चलने को प्रेरित कर सके, जो ऐसे कुमार्ग से बचाकर सुमार्ग पर ले जा सके। हम ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हुए साथ ही यह स्वीकार करें कि परमेश्वर जो भी करता है अच्छा ही करता है।

!! ओ३म् !!

■ जरूरी नहीं की इंसान प्यार की मूरत हो, सुन्दर और बेहद खूबसूरत हो, अच्छा तो वही इन्सान होता है, जो तब आपके साथ हो, जब आपको उसकी जरूरत हो।।

समर्पित व्यक्तित्व के धनी महात्मा हंसराज

आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

महिमा तेऽन्येन न सन्नशे। यजु. 23/15 अर्थात् ते= तुम्हारी, महिमा= परोपकार, सदाचार की महिमा को, अन्येन=अन्य कोई, सन्नशे= नष्ट नहीं कर सकता।

मंत्र का आशय है परोपकार, सेवाभावी व्यक्ति अमर हो जाता है। यह अमरता सबको प्राप्त नहीं होती, यह अमरता तो कर्मशीलों को ही प्राप्त होती है। वेद में सुस्पष्ट कहा है- अधारयदररिन्दानि सुक्रतुः पुरु सद्मानि सुक्रतुः।। ऋ.1/139/10

अर्थात् जो अररिन्दानि= जल के सदृश निरंतर (अररिन्दानि इति उदकनाम, निघ. 1/12), सुक्रतु= पुरुषार्थ, परोपकार, अधारयत्= धारण करता है, और, पुरु=बहुत, सद्मानि= ज्ञान के, सुक्रतु= सुकर्म करता है, वह सबके द्वारा, श्लोकम्= प्रशंसित होता है (श्लोकम् पद मंत्र के पूर्व चरण में है)। मंत्र का श्लोकम् पद जहां प्रशंसा, कीर्ति का ख्यापक है, वही अमरता का संदेश भी विज्ञापित करता है।

परोपकारी महात्मा हंसराज : मान्य महात्मा हंसराज सरल, सत्यव्रती, निरभिमानी, विद्याविलासी, जगत के दुखापहारी, कर्मशील, परोपकारी, व्यक्तित्व के अवदानों से युक्त थे। वेदोक्त परोपकार, सेवा और पुरुषार्थ के कर्म उनमें समाहित थे। आपका परिवार यद्यपि धन-दौलत से सम्पन्न नहीं था, तथापि श्रम, परिश्रम, तप, त्याग, स्वाभिमान, परोपकार आदि के गुणैश्वर्यों से सिक्त था। परोपकार आपको विरासत में मिला था।

महात्मा हंसराज का स्वभाव सेवा, सत्कर्म, सर्द्ध से समन्वित था। उनकी यह प्रवृत्ति यह स्वभाव एकांगी नहीं था, उनकी सेवा, परोपकार का कार्य व्यापक क्षेत्र वाला था।

अद्‌भुत सेवा कर्म : परोपकार व सेवा के आगे उन्हें व्यष्टिरूप में धन, द्रव्य, ऐश्वर्य दृष्टिगोचर नहीं होते थे। लोग सर्विस करते हैं, बदले में उन्हें वेतन मिलता है, पुनरपि यह कहा जाता है अमुक व्यक्ति, अमुक पद पर, अमुक स्थान पर सेवारत है। सुनिश्चित अवधि के पश्चात् उस कार्य व पद से रिटायरमेंट पृथक होने पर भी यही कहा जाता है, कि अमुक व्यक्ति सेवा निवृत हुआ या हो गये।

महात्मा हंसराज का सेवा कर्म अद्भुत था। उस सेवा में न वेतन, न रिटायरमेंट, स्वतः ही पद का परित्याग, वेतन भी अस्वीकार। महात्मा हंसराज सेवा के कार्य बचपन से ही करते चले आये। ग्राम में प्रायः जन अनपढ़ होते ही है, उनकी सहायता करना महात्मा हंसराज अपना करणीय कार्य मानते थे।

अपनी पढ़ायी भी छोड़कर दूसरे के पत्र लिखने तथा उनके आये हुए पत्रों को पढ़कर सुनाने का कार्य वे सेवा रूप में करते थे। महात्मा हंसराज के कार्य क्षेत्र के शिक्षा, लोकजागृति, तप, त्याग आदि अनेक पत्र हैं। उनमें सामाजिक, जनहित सेवा, परोपकार का पक्ष भी अति प्रबल है। उनमें सेवा, परोपकार का भाव इतना रचा पचा था कि अकाल, भूकंप, प्राकृतिक आपदाएं सबमें अपनी कर्माहुति देते रहे। अकाल, भूकंप आदि आपदाएं अति भीषण

महात्मा हंसराज सरल, सत्यव्रती, निरभिमानी, विद्याविलासी, जगत के दुखापहारी, कर्मशील, परोपकारी, व्यक्तित्व के अवदानों से युक्त थे। वेदोक्त परोपकार, सेवा और पुरुषार्थ के कर्म उनमें समाहित थे। आपका परिवार यद्यपि धन-दौलत से सम्पन्न नहीं था, तथापि श्रम, परिश्रम, तप, त्याग, स्वाभिमान, परोपकार आदि के गुणैश्वर्यों से सिक्त था। परोपकार आपको विरासत में मिला था। महात्मा हंसराज का स्वभाव सेवा, सत्कर्म, सर्द्ध से समन्वित था। उनकी यह प्रवृत्ति यह स्वभाव एकांगी नहीं था, उनकी सेवा, परोपकार का कार्य व्यापक क्षेत्र वाला था। अद्भुत सेवा कर्म : परोपकार व सेवा के आगे उन्हें व्यष्टिरूप में धन, द्रव्य, ऐश्वर्य दृष्टिगोचर नहीं होते थे। लोग सर्विस करते हैं, बदले में उन्हें वेतन मिलता है, पुनरपि यह कहा जाता है अमुक व्यक्ति, अमुक पद पर, अमुक स्थान पर सेवारत है। सुनिश्चित अवधि के पश्चात् उस कार्य व पद से रिटायरमेंट पृथक होने पर भी यही कहा जाता है, कि अमुक व्यक्ति सेवा निवृत हुआ या हो गये। महात्मा हंसराज का सेवा कर्म अद्भुत था। उस सेवा में न वेतन, न रिटायरमेंट, स्वतः ही पद का परित्याग, वेतन भी अस्वीकार। महात्मा हंसराज सेवा के कार्य बचपन से ही करते चले आये। ग्राम में प्रायः जन अनपढ़ होते ही है, उनकी सहायता करना महात्मा हंसराज अपना करणीय कार्य मानते थे।

होती है, सहना बड़ा कठिन होता है, उन आपदाओं को बड़ी बारीकी से वे देखते थे, सहायता करते थे। उनके सेवा कार्य के अनेक उदाहरण है।

अकाल, भूकंप के सेवा कार्य : एक बार राजस्थान के बीकानेर स्थान में 1895 में अति भीषण दुर्भिक्ष हुआ। उस दुर्भिक्ष से निपटने के लिए महात्मा हंसराज ने स्वयं एवं लाला लाजपत राय और कॉलेज के स्वयं सेवक छात्रों के साथ तत्स्थल पर पहुंचकर उनकी सहायता की। दुर्भिक्ष से पीड़ित अनेकों अनाथ बच्चों को आगरा, भिवानी, फिरोजपुर के अनाथालय में रखकर उनकी सुरक्षा की। राजस्थान में पुन: 1899 में दुर्भिक्ष हुआ। दुर्भिक्ष= अकाल होते ही अनेक विधर्मी टूट पड़े। महात्मा जी ने अपनी देख रेख में जहां उन विद्यार्थियों को हिंदुत्व को संरक्षण दिया, वहीं अकालग्रस्त लगभग 14,000 बच्चों को स्थायी संरक्षण दिया।

कांगड़ा हिमालय में 1905 में विनाशकारी भयंकर भूकंप आया। उस भूकंप का सामना भी महात्मा हंसराज ने लाला लाजपतराय, स्वयं सेवकों एवं डाक्टरों के सहयोग से किया। उनकी सहायता एवं सेवा की। अवध में 1908 में दुर्भिक्ष की आपदा आयी। तब महात्मा हंसराज जी ने अपने नेतृत्व में 15,000 से अधिक लोगों की रक्षा की। उनके सहयोगी पं. रलियाराम बजवाड़िया ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर सबकी सेवा की।

बजवाड़िया के सेवा कार्य की प्रशंसा ईसाईजनों ने भी की। दुर्भिक्ष सेवा के अनेकों उदाहरण हैं। गढ़वाल में 1918 को, उड़ीसा में 1920 में, जम्मू, शिमला, कांगड़ा में 1921 में दुर्भिक्ष की आपदाएं आयीं। उन प्राणघाती अवसरों पर भी सेवा का कार्य महात्मा हंसराज की देखरेख में ही हुआ।

दंगे आदि में सेवा कार्य व धर्मरक्षा : दुर्भिक्ष= अकाल सेवाओं की भांति दंगों के अवसरों पर भी विधर्मियों से महात्मा हंसराज ने पंगे लिये। केरल मालावार में 1921-22 में हिंदू, मुस्लिमों के मध्य भयंकर संघर्ष हुआ। उस संघर्ष में भोपला मुसलमानों ने हिंदुओं पर अति कहर ढहाये। जबरन विधर्मी बनाया, नारियों का अपहरण किया, उनके साथ दुर्व्यवहार किया। इस संघर्ष मे महात्मा हंसराज ने बड़ी मेहनत की। उनके सहायक पं. ऋषिराम, पं. मस्तानाचंद, महंत सावनमल एवं लाला खुशहालचंद= (महात्मा आनंद स्वामी) ने अति परिश्रम किया। 15,000 से अधिक हिंदू जनों को पुन: प्रतिष्ठित किया।

कोहाट में 1924 में भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ। दंगाइयों ने संपत्ति की लूटपाट की। महात्मा हंसराज ने इस अवसर पर सहायतार्थ जन भेजकर उनकी रक्षा की। इसी सन् में मुजफ्फरगढ़, रोहतक में बाढ़ ने कहर ढहाया। इस विपदा का भी महात्मा हंसराज ने भी सामना किया। पीड़ितों को भी धनादि से सुरक्षित किया। जम्मू-कश्मीर पुंछ में 1932 में मुसलमानों ने दंगे कर हिंदुओं को आतंकित किया, अत्याचार किये। महात्मा हंसराज ने मुफ्त लंगर खोलकर, बिस्तर, बर्तन, कपड़े आदि देकर उनकी सहायता की।

बिहार में 1934 में भीषण भूकंप ने आ घेरा। उस विपदा में महात्मा हंसराज ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को प्रेरणा देकर सहायता करायी। 40,000 से अधिक ग्राम्यजनों को खाद्य वस्त्र आदि सामग्री पहुंचवायी। 1934 में ही 27-28 मई को क्वेटा भूकंप के जाल में फंस गया। 25-30 हजार से अधिक लोगों के मृत्यु ने ग्रस लिया। इस प्रलय में भी महात्मा हंसराज ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से 30,000 के लगभग रुपये सेवा में लगवाये। सरकारी बाधाओं को भी झेलकर सेवा कार्य करवाया।

अन्य सामाजिक सेवाएं : महात्मा हंसराज ने देश के लोगों को भूकंप, मुस्लिम दंगों आदि से तो सुरक्षित किया ही, साथ ही सामाजिक कुरीतियों से भी बचाया। विधवा विवाह, छुआछूत, जातिपात आदि कुरीतियों का खूब खंडन किया। स्त्री शिक्षा, संगठन, ब्रह्मचर्य, यज्ञ, याग आदि के प्रचार के व्यापक सेवा कार्य किये। डी.ए.वी. के सभी कार्य उनकी व्यापक सेवा का ही प्रतिमान है। डी.ए.वी. कॉलेज आदि में अपने तप, त्याग द्वारा अनेक सुयोग्य, कर्तव्यनिष्ठ उत्तराधिकारी बनाये। उत्तराधिकारी के रूप में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का कार्यभार संभालने के लिए लाला खुशहाल चंद जी को नियुक्त किया। सार्वदेशिक सभा द्वारा नवमास 1927 में प्रथम विशाल आर्य महासम्मेलन हुआ, उसके अध्यक्ष अपने कार्यों से सम्पूजित महात्मा हंसराज जी बने।

आर्य समाज को समर्पित व्यक्तित्व : महात्मा हंसराज का जीना अपने लिए नहीं अपितु समाज, देश, राष्ट्र के लिए था। सन् 1911 में उनके पुत्र बलराज पर लॉर्ड हार्डिग पर बम फेंकने के षड्यंत्र में शामिल होने का आरोप लगा, मुकदमा चला। इतना ही नहीं काले पानी की सजा हुई। परंतु वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए। महात्मा हंसराज जी का जीवन ऐसी घटनाओं से भरा हुआ था। ○

महान शिक्षाविद महात्मा हंसराज जी की दृष्टि में शिक्षा का आदर्श

स्व. प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट.

भारत माता ने समय-समय पर अनेक त्यागी-तपस्वियों, बलिदानियों, वीरों, क्रांतिकारियों, महापुरुषों को जन्म दिया। है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि श्रद्धानन्द, महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज आदि इसी भूमि की देन है। ऋषिवर दयानन्द के अनन्य भक्त, वैदिक मिशन के प्रति सर्वात्मना समर्पित, आर्यसमाज के ध्वज-वाहक, दलितोद्धारक, शुद्धि-आंदोलन के पुरोधा, सर्वस्व त्यागी, नि:स्वार्थ समाजसेवी, चिंतक, मनीषी महात्मा हंसराज जी महान् शिक्षाविद् और आदर्श शिक्षक थे। शिक्षा क्षेत्र में की गई उनकी नि:स्वार्थ सेवाएं स्पृहणीय एवं अनुकरणीय है। उनके जैसा सर्वत्यागी, शिष्य-वत्सल, नि:स्वार्थ शिक्षक मिलना बहुत कठिन है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कुशाग्र बुद्धि, आर्य समाज के धनी, सिद्धांतों के प्रति दृढ़ निष्ठा रखने वाले महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी का जन्म अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के होशियारपुर जनपद के ग्राम बजवाड़ा में 19 अप्रैल 1864 में एक सामान्य परिवार में हुआ। इनका प्रारंभिक जीवन बहुत गरीबी एवं अभावों में व्यतीत हुआ। लाहौर के राजकीय कॉलेज से बीए की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की और पूरे पंजाब प्रांत में द्वितीय स्थान पर रहे। लाहैर में उन्होंने बड़े भाई श्री मुल्खराज जी के पास रहकर अपना अध्ययन पूर्ण किया।

लाहौर में श्री हंसराज जी अनेक तपोनिष्ठ आर्यनेताओं एवं आर्यसमाज के निकट सम्पर्क में आए। इन आर्यनेताओं में लाला साईंदास जी, लाला लाजपत राय जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि प्रमुख थे। महर्षि दयानन्द के देहावसान के बाद लाहौर के ऋषिभक्त उनकी स्मृति में एक ऐसा स्मारक बनाना चाहते थे, जो चिरस्थाई हो। इस दृष्टि से एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की आवश्यकता अनुभव की गई कि जिसमें प्राचीन विषयों के साथ जीवनोपयोगी आधुनिक विषयों का भी समावेश हो। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल तथा कॉलेज खोलने का प्रस्ताव रखा, जिसे करतल ध्वनि से सभी ने स्वीकार किया और इस मद में जी खोलकर दान भी दिया।

28 फरवरी 1886 के दिन आर्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर इस विषय पर पुरजोर चर्चा हुई और अंत में लाला हंसराज जी ने कहा कि मैं अपना सारा जीवन बिना वेतन के दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल-कॉलेज को समर्पित करता हूं। उनकी इस त्यागवृत्ति की तत्कालीन समाचार पत्रों में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। उनकी इस घोषणा से आर्यजनों का उत्साह द्विगुणित हो उठा तथा उनमें प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी। महात्मा हंसराज जी की तरह शिक्षा के लिए जीवन-दान करने वाले व्यक्ति विरले ही होंगे।

एक जून 1886 को आर्यसमाज, लाहौर के भवन में खुले डीएवी स्कूल के प्रथम अवैतनिक प्रधानाध्यापक महात्मा हंसराज ही बने। तीन वर्ष के बाद इस स्कूल ने कॉलेज का रूप ले लिया और तब महात्मा हंसराज जी को ही इसका प्राचार्य बनाया गया। अपने अग्रज मुल्खराज जी द्वारा प्रतिमाह दिए जाने वाले चालीस रुपयों से महात्मा जी ने अपने परिवार का भरण-पोषण किया पर अपनी संस्था से एक पैसा भी नहीं लिया। इसके विपरीत उन्हें जो भी दान-दक्षिणा या भेंट प्राप्त होती, उसे भी डी.ए.वी. संस्था को दे देते। उन्होंने

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कुशाग्र बुद्धि, आर्य समाज के धनी, सिद्धांतों के प्रति दृढ़ निष्ठा रखने वाले महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी का जन्म अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के होशियारपुर जनपद के ग्राम बजवाड़ा में 19 अप्रैल 1864 में एक सामान्य परिवार में हुआ। इनका प्रारंभिक जीवन बहुत गरीबी एवं अभावों में व्यतीत हुआ। लाहौर के राजकीय कॉलेज से बीए की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की और पूरे पंजाब प्रांत में द्वितीय स्थान पर रहे। लाहैर में उन्होंने बड़े भाई श्री मुल्खराज जी के पास रहकर अपना अध्ययन पूर्ण किया।लाहौर में श्री हंसराज जी अनेक तपोनिष्ठ आर्यनेताओं एवं आर्यसमाज के निकट सम्पर्क में आए। इन आर्यनेताओं में लाला साईंदास जी, लाला लाजपत राय जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि प्रमुख थे।

अपने अनेक सहयोगियों को भी नाम मात्र के वेतन पर कार्य करने की प्रेरणा दी तथा असंख्य विद्यार्थियों का निर्माण किया। डीएवी शिक्षण संस्थाओं में पच्चीस वर्ष तक अपनी अवैतनिक सेवाएं प्रदान करने के उपरांत उन्होंने स्वैच्छिक सेवा-निवृति ले ली तथा नि:स्वार्थ समाजसेवा में जुट गये।

महात्मा हंसराज जी एक आदर्श शिक्षक, प्रबुद्ध उपदेशक, उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता, चिंतक-मनीषी और सुयोग्य लेखक थे। एक लंबे समय तक शिक्षा जगत से जुड़े रहने के कारण शिक्षा के आदर्श स्वरूप के विषय में उनके अपने सुस्पष्ट विचार थे, जिन्हें उन्होंने अपने कुछ लेखों में वाणी दी है। महात्मा हंसराज जी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना है। 'मनुर्भव' का दिव्य संदेश देना शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है। मनुष्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास हो। साक्षण हो जाना या नौकरी पा लेना शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य नहीं है। अथोपार्जन की अंधी दौड़ मं आज के अनेक शिक्षित मानवता को भूलकर अध:पतन के गर्त में गिरते जा रहे हैं तथा 'साक्षरा विपरीताश्चैव राक्षसा: एव केवलम्' की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं।

महात्मा हंसराज जी एक आदर्श शिक्षक, प्रबुद्ध उपदेशक, उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता, चिंतक-मनीषी और सुयोग्य लेखक थे। एक लंबे समय तक शिक्षा जगत से जुड़े रहने के कारण शिक्षा के आदर्श स्वरूप के विषय में उनके अपने सुस्पष्ट विचार थे, जिन्हें उन्होंने अपने कुछ लेखों में वाणी दी है। महात्मा हंसराज जी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना है। 'मनुर्भव' का दिव्य संदेश देना शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है।

मनुष्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास हो। साक्षण हो जाना या नौकरी पा लेना शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य नहीं है। अथोपार्जन की अंधी दौड़ मं आज के अनेक शिक्षित मानवता को भूलकर अध:पतन के गर्त में गिरते जा रहे हैं तथा 'साक्षरा विपरीताश्चैव राक्षसा: एव केवलम्' की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं।

शिक्षा के द्वारा छात्र के सर्वांगीण विकास का आशय यह है कि उसकी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास किया जाए। आदर्श शिक्षा में इन तीनों का समावेश परमावश्यक है। इन तीनों के समुचित विकास से ही मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बन सकेगा और अंतत: जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा।

शिक्षा का पहला आदर्श यह होना चाहिए कि छात्रों का शरीर हृष्ट-पुष्ट हो, वे बलवान, निरोग और पूर्णत: स्वस्थ हों, क्योंकि 'शरीरमाद्यं खुल धर्मसाधनम्' अर्थात् निश्चित रूप से स्वस्थ शरीर ही धर्म का पहला साधन है। विद्यार्थी का धर्म है विद्याध्ययन और उसके लिए शरीर का स्वस्थ रहना परमावश्यक है। प्राय: यह देखने में आता है कि विद्यार्थी समय-कुसमय पढ़ने के फेर में शरीर का सत्यानाश कर बैठते हैं और फिर न इधर के रहते हैं, न उधर के। शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को भी समुचित महत्व दिया जाना चाहिए तथा छात्रों को इसके महत्व से अवगत कराना चाहिए।

शरीर को अच्छा व स्वस्थ रखने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। उन दिनों बाल-विवाह की प्रथा थी, इसलिए बहुत-से छात्र विवाहित होते थे, अत: महात्मा हंसराज जी ने लिखा है कि 'प्रत्येक छात्र को जान लेना चाहिए कि वह ब्रह्मचारी है। उसका संबंध न अपनी स्त्री से और न अन्य स्त्री से होना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि केवल पवित्र रहना ही नहीं, अपितु ब्रह्मचर्य से हड्डियोंको दृढ़ बनाना है। स्मरण रखो, ब्रह्मचर्य आपमें धर्म भाव, मुख पर लालिमा एवं तेज उत्पन्न करेगा।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दूसरी आवश्यक बात है अच्छी आदतों का विकास। समय पर सोना और समय पर उठना, प्रतिदिन स्नान, दंतधोवन आदि करना तथा तपोनिष्ठ जीवन जीना। स्वस्थ रहने के साथ दीर्घायु प्राप्ति का भी मूल मंत्र है। प्रतिदिन व्यायाम करना उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए तीसरी आवश्यक बात है। महात्मा हंसराज जी व्यायाम की परीक्षा को अनिवार्य बना देने के पक्षधर रहे हैं।

महात्मा हंसराज जी की दृष्टि में शिक्षा का दूसरा आदर्श है छात्रों की मानसिक उन्नति। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त छात्रों को वे पुस्तकें भी पढ़नी चाहिए जिनसे उनके मस्तिक का विकास हो और उसमें डुबकी लगानी चाहिए। इसके लिए वे अच्छे पुस्तकालयों का सदुपयोग कर सकते हैं। केवल पाठ्य-पुस्तकों को रट लेने से ही छात्रों का समुचित मानसिक विकास नहीं हो सकता, भले ही इससे वे परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लें, पर सीमित ज्ञान से जीवन की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की जा सकती। OO

क्या मूर्तिपूजा वेदानुकूल, तर्क व युक्ति संगत है

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

हम जिस संसार में रहते हैं वह हमें बना बनाया मिला है। हम अपने लिये घर बनाते हैं या किराये का घर लेकर रहते हैं। अपना मकान हम स्वयं बनाते हैं या अपने धन से खरीदते हैं और किराये का मकान किसी दूसरे व्यक्ति का होता है जो उसे अपने धन और पुरुषार्थ से बनाता है। हम उसे उसके धन व पुरुषार्थ के बदले में मासिक किराये के रूप में धन देते हैं क्योंकि आजकल पुरुषार्थ को धन देकर खरीदा व बेचा जाता है।

इसी प्रकार हमारी यह सृष्टि हमें बनी बनाई मिली है और कोई हमसे इसका किराया भी नहीं मांगता है। हम इस सृष्टि का उपभोग करने के लिये किराये के रूप में उस सत्ता को जिसने यह समस्त संसार बनाया है, अपनी किस वस्तु वा धन आदि का दान दे सकते हैं? इसका उत्तर यह है कि हमारे पास अपनी ऐसी कोई वस्तु नहीं जिससे इसका ऋण चुकाया जा सके। हमारा कर्तव्य है कि हम सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता और इसके पालक को जाने। हम उसे सृष्टिकर्ता व स्रष्टा के नाम से पुकार सकते हैं। यह सृष्टि ऐश्वर्य से युक्त है। धरती, वायु, जल, अन्न, फूल, फल, पशु, पक्षी आदि एक प्रकार का धन व ऐश्वर्य है। यह सब उस सृष्टिकर्ता का ही है। सब ऐश्वर्यों के स्वामी को ईश्वर कहा जाता है। इसलिये वैदिक धर्म व संस्कृति में सृष्टि बनाने वाली सत्ता का एक नाम ईश्वर भी है।

यह सृष्टि वा ब्रह्माण्ड अति विशाल व अनन्त परिमाण वाला है। अत: उस ईश्वर को भी अनन्त व सर्वव्यापक मानना होगा। वह आंखों से दिखाई नहीं देता। इसका कारण उसका अतिसूक्ष्म होना है। अत: निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि सृष्टिकर्ता ईश्वर सर्वव्यापक एवं सूक्ष्म सत्ता है। विज्ञान का नियम है कि कोई भी वस्तु यदि बनती है तो वह अपने उपादान कारण से बनती है जो कि भौतिक व जड़ होता है। उस मूल कारण पदार्थ जिससे वस्तुयें बनती हैं वह अनादि व अनुत्पन्न होता है। उसका विनाश नहीं किया जा सकता। सत्तावान का अभाव नहीं होता और अभाव से भाव व सत्तावान पदार्थों की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

इस कारण ईश्वर अनादि व अविनाशी सिद्ध होता है। इसी प्रकार इस सृष्टि का अनादि उपादान कारण त्रिगुणात्मक प्रकृति सिद्ध होती है। इस पूरे विषय को जानने के लिये हमें वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की शरण लेनी पड़ती है जहां ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति का यथार्थ स्वरूप व इनके गुण, कर्म व स्वभाव हमें प्राप्त व ज्ञात होते हैं। इस ज्ञान को पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद लोग अपने आलस्य, प्रमाद एवं कुछ अन्य कारणों से भूल चुके थे। ऋषि दयानन्द ने विद्याध्ययन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन और योगाभ्यास किया, समाधि को सिद्ध किया, घोर तप एवं पुरुषार्थ किया और साथ ही इन ग्रन्थों को प्राप्त कर इनका अध्ययन भी किया। उन्होंने अपनी सत्यान्वेषी बुद्धि से सभी अनादि व अविनाशी मूल तत्वों सहित धर्माधर्म का तर्क व युक्तिसगत

आस्था सत्य सिद्धान्तों में विश्वास को कहते हैं। मूर्तिपूजा करने वाले कभी मूर्तिपूजा की सत्यता और इससे होने वाले लाभ व हानियों का चिन्तन व विचार नहीं करते। मूर्तिपूजा की परम्परा अधिक पुरानी न होकर जैनमत से आरम्भ हुई है। वर्तमान में भी यह विद्यमान है। महर्षि दयानन्द सत्यान्वेषी थे। उन्होंने मूर्तिपूजा की छानबीन की तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा से कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि होती है। उन्होंने प्राचीन वेद, उपनिषदों व दर्शन आदि ग्रन्थों से जड़ मूर्तिपूजा की पुष्टि करनी चाही परन्तु उन्हें इसके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं मिला। सनातन धर्म के क्षेत्र में वेदों को ईश्वर से प्राप्त एवं सभी धार्मिक विषयों में परम प्रमाण माना जाता है। ऋषि दयानन्द के शब्दों में वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य सभी ग्रन्थ मनुष्यकृत व ऋषिकृत होने से परतः प्रमाण हैं। ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा करने वाले सनातनी मत के अनुयायियों को मूर्तिपूजा को वेद, तर्क व युक्ति से सिद्ध करने की चुनौती दी थी परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी काशी के शीर्ष विद्वान इसके लिये सहमत नहीं हुए थे।

ज्ञान प्राप्त किया जो वेद, दर्शन और उपनिषद आदि ग्रन्थों पर आधारित था। उन्होंने अपने ज्ञान को सत्यार्थप्रकाश के रूप में देश की जनता को प्रदान किया जिससे मनुष्य सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर सत्यासत्य का ज्ञान, बोध व विवेक प्राप्त कर सकता है।

ईश्वर ने हमें यह सृष्टि और इसके सभी पदार्थ नि:शुल्क दिये हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम इसका मूल्य ईश्वर को दें क्योंकि यह सभी वस्तुयें उसी की देन हैं। इसका उपाय केवल उस ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना ही हो सकता है। स्तुति में ईश्वर के यथार्थ गुणों को जानना, उनका चिन्तन व मनन सहित उन गुणों के द्वारा ईश्वर की यथार्थ प्रशंसा, कीर्तन व गुणगान करना है। प्रार्थना में हम ईश्वर से अपनी इच्छाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता की याचना करते हैं। उपासना का अर्थ ईश्वर के समीप बैठना होता है।

ऋषि दयानन्द के समय में इस स्तुति, प्रार्थना व उपासना के स्थान पर मूर्तिपूजा प्रचलित थी। आज भी यह पूर्ववत् व पहले से भी अधिक प्रचलित है। दिन प्रतिदिन इसमें वृद्धि हो रही है और उपास्यदेवों की संख्या में वृद्धि भी हो रही है। नये नये जीवित व मृतक देवता मूर्तिपूजा में सम्मिलित होते जाते हैं। अभी कुछ वर्ष ही हुए साईं बाबा की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की जाने लगी। यह ईश्वर के वेद ज्ञान सहित वेदाचरण, ईश्वर भक्ति तथा योगाभ्यास से भी अपरिचित थे। मूर्ति पूजा को जिन उद्देश्यों के लिये किया जाता है उसकी पूर्ति कैसे होती है? इसका किसी के पास कोई प्रमाण नहीं है। अन्ध आस्था व परम्परा के आधार पर मूर्तिपूजा का कृत्य किया जाता है। आस्था का अर्थ भी लोग नहीं जानते।

आस्था सत्य सिद्धान्तों में विश्वास को कहते हैं। मूर्तिपूजा करने वाले कभी मूर्तिपूजा की सत्यता और इससे होने वाले लाभ व हानियों का चिन्तन व विचार नहीं करते। मूर्तिपूजा की परम्परा अधिक पुरानी न होकर जैनमत से आरम्भ हुई है। वर्तमान में भी यह विद्यमान है। महर्षि दयानन्द सत्यान्वेषी थे। उन्होंने मूर्तिपूजा की छानबीन की तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा से कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि होती है। उन्होंने प्राचीन वेद, उपनिषदों व दर्शन आदि ग्रन्थों से जड़ मूर्तिपूजा की पुष्टि करनी चाही परन्तु उन्हें इसके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं मिला।

सनातन धर्म के क्षेत्र में वेदों को ईश्वर से प्राप्त एवं सभी धार्मिक विषयों में परम प्रमाण माना जाता है। ऋषि दयानन्द के शब्दों में वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य सभी ग्रन्थ मनुष्यकृत व ऋषिकृत होने से परतः प्रमाण हैं। ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा करने वाले सनातनी मत के अनुयायियों को मूर्तिपूजा को वेद, तर्क व युक्ति से सिद्ध करने की चुनौती दी थी परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी काशी के शीर्ष विद्वान इसके लिये सहमत नहीं हुए थे। बार-बार चुनौती देने पर उन्हें विवश होकर शास्त्रार्थ के लिये तत्पर होना पड़ा परन्तु उन्हें वेदों में मूर्तिपूजा का कोई उल्लेख व प्रमाण नहीं मिला। वह बीस हजार से अधिक चार वेदों के मंत्रों में से एक भी वेदमंत्र मूर्तिपूजा किये जाने के पक्ष में प्रस्तुत नहीं कर सके। इस कारण 16 नवम्बर, सन् 1869 को काशी के आनंद बाग में काशी के राजा श्री ईश्वरी नारायण सिंह की अध्यक्षता तथा पचास हजार जनसमूह की उपस्थिति में अकेले ऋषि दयानन्द का पौराणिक सनातन धर्म के लगभग 30 शीर्ष विद्वानों से शास्त्रार्थ हुआ जिसमें ऋषि दयानन्द की विजय हुई। काशी में हुआ यह शास्त्रार्थ मुद्रित रूप में उपलब्ध है जिसे इच्छुक व्यक्ति देख सकते हैं।

वेदों में जड़ पदार्थों वा मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। वेदों से मूर्तिपूजा का खंडन होता है। प्रमाण रूप में यजुर्वेद के 40/9 और 32/3 को प्रस्तुत किया जा सकता है। यह मन्त्र हैं–

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
तपो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्यांरताः।।
न तस्य प्रतिमाऽअस्ति।

OO

प्रेरक विचार

- सत्य और धर्म की रक्षा दृढ़ता से होती है। जिसे प्राणों का मोह है वह धर्म का पालन नहीं कर सकता। धर्म का पालन किए बिना जीवन सफल नहीं हो सकता।
- जिस प्रकार वायु की सहायता पाकर आग शुष्क घास को जला देती है। उसी प्रकार चित्त की वासनाओं, पाप वृत्तियों को जलाने के लिए भगवान की भक्ति समर्थ है।
- संतोष सबसे बड़ा सुख है।
- विपत्ति, कष्ट, क्लेश और दुख में धैर्यवान रहने वाला, उन्हें प्रसन्नता से सहन करने वाला मनुष्य अपने आप को प्रभु कृपा का पात्र बना लेता है।

होली का वास्तविक एवं वैदिक स्वरूप

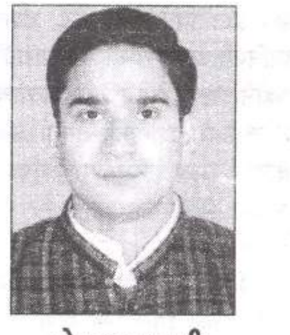

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

हमारे देश का होली मुख्य त्योहार है। भारत के अलावा विश्व के अन्य देश भी होली को बड़ धूमधाम से मनाते हैं। हमारा देश प्रतिवर्ष होली के पर्व को रंगों के साथ मनाता है। इसलिए इस पर्व को रंगों का पर्व कहते हैं।

वर्तमान युग में होली के स्वरूप को बिगाड़ दिया गया है। होली शब्द से लोग ये अनुमान लगाते हैं कि शहर या गांव के प्रत्येक चौराहे पर लकड़ी के ढेर को इकट्ठा करके उसमें फूल और आटा डालकर पूजा करने और आग लगाने से होली का पर्व मनाया जाता है। इसके साथ लोग विभिन्न प्रकार के केमिकलों से बनाया हुआ रंग डालकर लोग होली मनाते हैं, जो पूर्णतया गलत है। मिठाई बांट देते और प्रसन्न होते हैं कि हमने और हमारे देश ने होली बनायी। यही देश में होली मनाने का तरीका है।

साथ में लोगों के अंदर एक धारणा होती है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठ जाती है और प्रह्लाद बच जाता है और होलिका जलकर लाख हो जाती है। तभी से हमारे देश में होली का त्योहार मनाया जाता है। लेकिन होली की पर्व की वास्तविकता कुछ और ही है। हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त है। आर्यावर्त देश में देश में वैदिक धर्म और वेद की परंपरा और उपदेश ही माने जाते थे। इसलिए हमारे देश आर्यावर्त कहाता था। आर्यावर्त में होली यज्ञ के साथ मनायी जाती थी। प्रत्येक नगर या गांव के लोग अपने-अपने घर से गांव का घी और गाय के गोबर से बने उपले साथ लाते थे और वेद मंत्रों के साथ यज्ञ किया जाता था। उस यज्ञ से वर्षा और सर्दी में उत्पन्न होने वाले कीटाणु नष्ट हो जाते थे और लोगों का जीवन सुखदायक बनता था।

यज्ञ के पश्चात सभी बस्ती के आपसी विवाद को मिटाकर एक-दूसरे से गले मिलते थे। और खुशी में एक-दूसरे को गुलाल लगाते थे, मिठाई खिलाते थे। इससे प्रायः सभी में खुशी का माहौल रहता था। इसी पर्व को होली के रूप में मनाते थे। यहां होली का शब्द का सामान्य अर्थ यह होता है कि जो घटनाएं पूर्व में हुई उसे भुलाकर आज से आगे की जिंदगी को प्रसन्नतापूर्वक जिएंगे। इसीलिए इस पर्व को होली का नाम दिया गया।

आज के मूर्खों ने होली के पावन पर्व को शराब, जुआ आदि के साथ मनाना शुरू कर दिया। डीजे आदि के साथ होली मनायी जाने लगी। दूषित पदार्थों से बने रंगों से होली मनायी जाने लगी। जिससे लोगों को फायदे की जगह नुकसान होने लगा। हमारे भारतवासी होली के असली स्वरूप को पहचानें और होली को प्रेम और मिलन के त्योहार के रूप में स्वीकार करें। **आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं।** ○○

वर्तमान युग में होली के स्वरूप को बिगाड़ दिया गया है। होली शब्द से लोग ये अनुमान लगाते हैं कि शहर या गांव के प्रत्येक चौराहे पर लकड़ी के ढेर को इकट्ठा करके उसमें फूल और आटा डालकर पूजा करने और आग लगाने से होली का पर्व मनाया जाता है। इसके साथ लोग विभिन्न प्रकार के केमिकलों से बनाया हुआ रंग डालकर लोग होली मनाते हैं, जो पूर्णतया गलत है। मिठाई बांट देते और प्रसन्न होते हैं कि हमने और हमारे देश ने होली बनायी। यही देश में होली मनाने का तरीका है। साथ में लोगों के अंदर एक धारणा होती है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठ जाती है और प्रह्लाद बच जाता है और होलिका जलकर लाख हो जाती है। तभी से हमारे देश में होली का त्योहार मनाया जाता है। लेकिन होली की पर्व की वास्तविकता कुछ और ही है। हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त है। आर्यावर्त देश में देश में वैदिक धर्म और वेद की परंपरा और उपदेश ही माने जाते थे। इसलिए हमारे देश आर्यावर्त कहाता था। आर्यावर्त में होली यज्ञ के साथ मनायी जाती थी। प्रत्येक नगर या गांव के लोग अपने-अपने घर से गांव का घी और गाय के गोबर से बने उपले साथ लाते थे और वेद मंत्रों के साथ यज्ञ किया जाता था। उस यज्ञ से वर्षा और सर्दी में उत्पन्न होने वाले कीटाणु नष्ट हो जाते थे और लोगों का जीवन सुखदायक बनता था। यज्ञ के पश्चात सभी बस्ती के आपसी विवाद को मिटाकर एक-दूसरे से गले मिलते थे।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

अस्मिन् संसारे यावन्तो मानवा: प्राणिनो वा सततं नानाविधकर्मणि लग्ना दृश्यते, तेषां कार्यसम्पादने शरीर श्रमस्योपादेयत्वं प्राधान्येन विद्यते। शरीरेण विना भोजनादिकं किमपि कार्यं न सरित। शरीरं नाम इन्द्रियग्राम:। कर्मेन्द्रियाणां ज्ञानेन्द्रियाणां मनबुद्धीनाश्च समवायरूपं शरीरमिति कथ्यते। स च सकलविधपुरुषार्थसाधने समर्थ:। लौकिकपार-लौकिकाभीष्टसिद्धि: शरीरद्वारैव भवति, अत: शरीररक्षा प्राणप्रणेनाऽपि कर्त्तव्यम् शरीर एव आत्मा भवति। अस्य रक्षार्थ सर्वं त्यजेदिति शास्त्रेषु निर्दिष्टम्। तद्यथा-

आपदार्थे धनं रक्षेद् दारान् रक्षेद् धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि।।

तथा च-

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राणाः संस्थितिहेतवः।
तान् निघ्नता किन्न हतं रक्षता किं न रक्षितम्।।

इति।।

प्राप्तिप्सितकार्यविधातकेषु विघ्नेषु अस्वास्थ्यं प्रमुखतमं कारणमस्ति। अनेनास्वास्थ्येन न केवलं कार्यस्य हानि:, अपि तु कार्यकर्त्तु: प्राणहानिरपि सम्भवति। अस्वास्थ्यं नाम इन्द्रियाणां कार्यसम्पादने सामर्थ्यहीनत्वम्। स एव रुग्णत्वम्। अस्येन्द्रिय ग्राममस्य कोऽपि इन्द्रियस्तस्य अंशो वो रुग्णो भवति। तदा कार्यं सम्यक्तया न संपद्यते। यदि कस्यापि कर्मेन्द्रियाणि विकलानि सन्ति, स स्वकार्ये साफल्यं नाप्नोति। अत: शरीररक्षायै स्वास्थ्यरक्षा अत्यावश्यकी। आरोग्यं विना किमपि श्रेय: साध्यं न भवति। सर्वासां व्याधीनां मंदिरं शरीरमेव भवति। अत एव आयुर्वेदशास्त्रे सर्वप्रथमं शरीरस्य नैरुज्य-साधनमेव धर्ममूलमिति निर्दिश्यते। यत: स्वस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य च व्याधे: परिमोचनमेव चिकित्साशास्त्रस्य मूलम्।

शरीरस्य रक्षा नित्यं व्यायामेन सुकरं भवति। व्यायामेन शरीरेन्द्रियाणि स्वशैथिल्यं विहाय सम्पुष्टानि भवन्ति। व्यायामोऽपि नैकविधो भवति। प्रात:-प्रात: सायम् उद्यानेषु निसर्गतो शुद्धवायुसेवनम्, भ्रमणम्, धावनम्, क्रीडनम्, योगासनानां साधनादिकं सर्वश्च शरीरस्य स्वास्थ्यरक्षार्थं विहितम्। व्यायामेन न केवलं शरीरमेव पुष्णाति, अपि तु मनोबुद्धितेज प्रज्ञाबलाद योऽपि प्रवर्धन्ते। अत एव शास्त्रेषु निर्दिष्टम्-

व्यायामः पुष्टगात्रस्य बुद्धिस्तेजो यशोबलम्।
प्रवर्धन्ते मनुष्यस्य तस्माद् व्यायाममाचरेत्।। इति।।

पुरुषार्थचतुष्टयसम्पादने धर्म एव प्रधानं भवति। धर्मस्तु लोकव्यवहारसम्पादनम् सम्यक्तयेति। अतोऽपि शरीरनैरुज्यमतीवावश्यकम्। यतो रुग्ण: विकलोऽक्षमी न कस्यापि प्राणरक्षां कर्तुं शक्नोति न वा आपद् निवारणमेव। सुखसाधनशतैरपि समन्वित: सन् रुग्ण: सर्वाङ्गसुन्दरोऽपि कामानुपभोक्तुं प्रभवति। दुर्बलस्य दैवोऽपि सहायकृत्र भवति। उक्तश्च-

अश्वं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजापुत्रं बलिं दद्याद् दैवो दुर्बलघातकः।।

अपि च-

वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः।
स एव दीपनाशाय कृशेः कस्यास्ति सौहृदम्।।

लोकेऽपि दृश्यन्ते यत् दुर्बलान् बलिन: पीडयन्ति भक्षयन्ति शोषयन्ति च। अत: शबलताप्राप्त्यर्थम् आरोग्यं शरीररक्षा च अवश्यमेव कर्त्तव्यम्। उक्तं च कालिदाससेन-

'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'

OO

- जो ब्राह्मणादि उत्तम करते हैं वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसका भी उत्तम वर्ण में और तो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए।
- जब लौ वर्तमान और भविष्यत में उन्नतशील नहीं होते तब लौ आर्यावर्त और अन्य देशस्य मनुष्यों की बुद्धि नहीं होती। जब बुद्धि के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों का पठनपाठन, ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है। --**सत्यार्थ प्रकाश**

'स्वामी स्वतंत्रानंद महर्षि दयानन्द के प्रमुख योग्यतम शिष्य'

स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज आर्यसमाज के अनूठे संन्यासी थे। आपने अमृतसर के निकट सन् 1936 में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की और वेदों का दिगदिगन्त प्रचार कर स्वयं को इतिहास में अमर कर दिया। आपके बाद आपके प्रमुख शिष्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती इसी मठ के संचालक व प्रेरक रहे। स्वामी सर्वानन्द जी लिखते हैं कि पूज्यपाद सन्त शिरोमणि स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज इतिहास के एक जाने-माने विद्वान् थे। प्रो. राजेंद्र 'जिज्ञासु' ने पूज्य स्वामी जी महाराज का जीवन-चरित लिखा है और 'इतिहास दर्पण' नाम से स्वामी जी महाराज के प्रेरणाप्रद लेखों की खोज, संकलन व सम्पादन किया है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज प्रतिवर्ष तीन बार दीनानगर मठ में कथा किया करते थे। सदा नई-नई घटनाएं और नये-नये उदहरण दिया करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरियाणा का भ्रमण किया।

स्वामी स्वतंत्रानंद
स्मृति : 4 अप्रैल

हरियाणा सैनिक भर्ती का बहुत बड़ा क्षेत्र है। श्री स्वामीजी ने हरियाणा के जवानों को देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दी थी। उनके देश-प्रम को उबारा। तब देश के अन्दर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चल रहा था और देश से बाहर आजाद हिन्द सेना देश को गुलामी के बन्धन से मुक्त करने के लिए लड़ रही थी। श्री महाराज की इस ऐतिहासिक यात्रा में श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती व आचार्य भगवानदेव जी, परवर्ती नाम स्वामी ओमानन्दसरस्वती उनके साथ रहे। इनका कहना था कि स्वामी जी महाराज प्रतिदिन नया-नया इतिहास और नई-नई घटनाएं सुनाते थे।

विख्यात शिक्षाविद् विद्यामार्तण्ड आचार्य प्रियव्रतजी कहा करते थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्यसमाज के इतिहास की छोटी-बड़ी घटनाओं का जितना ज्ञान था उतना और किसी को नहीं। आश्चर्य इस बात पर होता था कि यह सारा ज्ञान उन्हें स्मरण वा कंठस्थ था। डायरी या नोट बुक देखने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। भारत के प्राचीन इतिहास की बातें भी स्वामीजी महाराज यदा-कदा सुनाया करते थे। एक बार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र विद्यालंकार दीनानगर मठ, निकट अमृतसर में आये। आपने स्वामीजी महाराज से प्राचीन भारत के नगरों व प्रदेशों के नाम पूंछें। स्वामीं जी ने उनकी सारी समस्या का समाधान कर दिया और एतद्विषयक एक लेख भी पत्रों में प्रकाशित करवाया। पं. चमूपति जी आर्यजगत् के एक अद्भुत लेखक, कवि व विचारक थे। आपकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप लाहौर में स्वामीजी महाराज से इतिहास-विषय पर घंटों चर्चा किया करते थे। आपने लिखा है कि स्वामीजी को इतिहास की खोज का चस्का है। स्वामीजी महाराज को विभिन्न प्रदेशों, वर्गों व जातियों के इतिहास व रीति-नीति का सूक्ष्म ज्ञान था।

किस मत की कौन-सी बात कैसे आरम्भ हुई, कौन-सा मत कैसे पैदा हुआ, उसने संसार का क्या व कितना हित-अहित किया, विश्व पर कितना प्रभाव छोड़ा, इन सब बातों की विस्तृत विवेचना स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी किया करते थे। श्रोता व पाठक स्वामी जी महाराज के गंभीर ज्ञान को देख, सुन व पढ़कर आश्चर्य करते थे। सिख इतिहास के भी स्वामीजी मर्मज्ञ थे। सिखमत किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ, क्या कारण थे, सिखपंथ कैसे बढ़ा, इसने देश के लिए क्या किया, कहां भूल की-सिख गुरुओं का वास्तविक मन्तव्य क्या था, लोगों ने इसे कितना समझा और देश पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, इन सब बातों का उन्हें गहरा व प्रामाणिक ज्ञान था। जाने-माने सिख विद्वान् प्रिंसिपल गंगासिंह जी की प्रार्थना पर आपने सिख मिशनरी कालेज में सिख इतिहास पर एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये। व्याख्यानमाला की समाप्ति पर जब प्रिंसिपल गगासिंह जी ने प्रश्न पूछने को कहा तो सबने यह कहा कि हमें कोई शंका नहीं है। हमें स्वामीजी ने तृप्त कर दिया है। प्राचार्य जोधासिंह जी तो दयानन्द मठ, दीनानगर में आकर आपसे बहुत विषयों पर चर्चा किया करते थे।

इतिहास की घटनाओं के कारणों व परिणामों को स्वामीजी महाराज बहुत अच्छे ढंग से समझाया करते थे। एक बार उदार विचार के एक मौलाना ने जो आर्य विद्वानों के सम्पर्क में थे, स्वामी जी के सामने कुछ शंकाएं रखीं। आपने मौलवी जी के सब प्रश्नों के उत्तर दिये। आपके विचार सुनकर उस मौलाना ने कहा इस्लाम-विषयक आपके गहरे ज्ञान से मैं बहुत प्रभावित हूं। मैंने ऐसी युक्तियुक्त प्रमाणिक बातें कभी नहीं सुनी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के इतिहास विषयक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इतिहास विषयक लेखों का एक संलकन 'इतिहास दर्पण' नाम से सन् १९९७ में प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन प्रसिद्ध विद्वान, लेखक, विचारक और इतिहासकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने किया है। स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुस्तक और प्रो. जिज्ञासु जी के परिचय में लिखा है कि आपने इस 'इतिहासदर्पण' ग्रन्थ के लिए बहुत परिश्रम किया है।

शत्-शत् नमन!

अमर हुतात्मा महाशय राजपाल

बलिदान दिवस
6 अप्रैल, शत्-शत् नमन

महाशय राजपाल (जन्म : 1885, अमृतसर; मृत्यु : 6 अप्रैल, 1929) हिन्दी की महान सेवा करने वाले लाहौर के निवासी थे। उनका लाहौर में प्रकाशन संस्थान था। वह खुद भी विद्वान थे। राजपाल पक्के आर्य समाजी थे और विभिन्न मतों का अपनी पुस्तकों में तार्किक ढंग से खंडन करते थे। देश के बंटवारे के बाद राजपाल का परिवार दिल्ली चला आया था। 'रंगीला रसूल' के प्रकाशन के बाद से महाशय राजपाल जी पर तीन जानलेवा हमले हुए, जिसमें 6 अप्रैल, 1929 को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर विश्राम कर रहे थे, तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोंप दिया, जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया। हत्यारे को कुछ युवकों द्वारा दौड़कर पकड़ लिया गया था। उसे लाहौर उच्च न्यायालय से फांसी की सज़ा हुई थी। 1924 में उन पर मुक़दमा शुरू हुआ था और 1929 में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पांच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें। राजपाल जी ने एक ही उत्तर दिया कि 'मैं विचार-स्वातंत्र्य और प्रकाशन की स्वतंत्रता में विश्वास रखता हूं और अपनी इस मान्यता के लिए बड़े से बड़ा दंड भुगतने के लिए तैयार हूं। आर्य समाज को उन पर नाज है! आर्ष गुरुकुल नोएडा का छात्रावास उन्हीं की स्मृति है।

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज नेता एवं शिक्षाविद

जन्म दिवस
19 अप्रैल, शत्-शत् नमन

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली। उनके द्वारा किए गए सेवा कार्य उल्लेखनीय है।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म दिवस
26 अप्रैल, शत्-शत् नमन

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। पंजाब के शिक्षा विभाग में झंग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इंडिया' तथा 'ग्रीस इन इंडिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतशः ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। आर्य समाज को उन पर नाज है! स्वामी दयानन्द जी के अंतिम समय पर उनका ईश्वर विश्वास (ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो) से नास्तिक से आस्तिक बन गए। आर्यसमाज की सेवा समाज सेवा व अधिक कार्य करने के लिए उनका छोटी आयु में बीमारी के कारण देहांत हो गया। आर्यसमाज के नियमों को अपनी पीठ पर लिखकर घूमते थे।

सच्चे राम को ईश्वर बताने की झूठी बैसाखी क्यों...

पं. आर्य प्रह्लाद गिरि

सीधे-सच्चे हिंदुओं को ईसाई बनाने के लिए कमर कसकर भारत में आये फादर कामिल बुल्के भी अप्रक्षिप्त बाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचंद्र, सती सीता, महावीर हनुमान, भारत आदि के यागपूर्ण जीवन-चरित्रों को पढ़ते हैं, तो वेदकालीन प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का ऐसा उत्कृष्ट सुंदरतम-स्वर्णिम सुखद दृश्य देखते ही चिल्ला उठते हैं।

जिस तरह सैकड़ों शेक्सपियर भी रामचरित मानस-सा विश्व का सुंदरतम महाकाव्य नहीं रच सकते, उसी तरह राम-सा दिव्य महा मानव (देवात्मा, देवदूत, बोधिसत्व- तथागत, तीर्थकर, पैगम्बर, प्रभुपुत्र, फरिश्ता) को भी कोई हमें इतिहास के किसी पन्ने पर नहीं दिखला सकता! ऐसा इसलिए भी कि-

'राम, तुम्हारा चरित्र स्वयं की काव्य है! कोई कवि बन जाए, सहज सम्भाव्य है!!' -राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

समुद्र को भी बांध देने वाले युग पुरुष हमारे राम मानव धर्म के उच्चादर्शों पर इसलिए भी चलते रहे कि इनके ही पूर्वज राजश्री मनु दुनिया वालों के सामने सगर्व घोषणा कर चुके थे-

एतत् देश प्रसूतस्य सकाशात्
अग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्व मानवाः।। -मनु.2.20

धरती माता के सारे द्वीप-द्वीपांतरों पर बसने वाले हर तरह के लोग इसी आर्यावर्त देश के अगुओं (नेताओं, प्रतिनिधियों) से अपने-अपने अनुकूल उन्नत चारित्रिक सभ्यता-संस्कृति को सीखते रहे! किंतु आज दुनिया को छोड़े, हिंदू कहलाने वाले हम आर्यवंशी लोग की अपने पूर्वज राम को ईश्वर (अनुकरणीय, सिर्फ चर्चा करने के योग्य) कहकर इनके विचारों-व्यवहारों से कुछ भी नहीं सीखते। राम का नाम ले-लेकर बेधड़क रावण-पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। गले ही नहीं, मंदिरों में भी राम के चित्र सजाकर, रावण की ही चित्रोंपासना में जुटे हुए हैं। अतः राम विमुखों की जो दशा होनी चाहिए, वहीं दुर्दशा महाभारत युद्ध के बाद से आज तक हमारी होती जा रही है।

हल्दी घाटी में घास की रोटी खाकर भी जब मुगलों के प्रहारों को तपस्वी महाराणा प्रताप अपने तलवारों से मां भारत-भारती की रक्षा कर रहे थे, उसी समय उसी काम को सारी मुसीबतों को सहते हुए बड़ी बहादुरी, बुद्धिमानी और कुशलता से संत कवि गोस्वामी तुलसीदास भी अपनी सफल लेखनी से, काशी से भागकर अयोध्या में कर रहे थे। काल्पनिक ही सही यदि श्रीमद् भागवत गीता को मौर्य गुप्तकाल में न लिखा जाता, तो सारे हिंदू बौद्ध बन गये होते और बामियान के विशाल बुद्ध मूर्ति की तरह सारे बौद्धों को मिटा देना अरबी-आक्रांताओं के लिए अत्यंत सरल था। इसी तरह स्वराष्ट्र-धर्मरक्षक महात्मा तुलसीदास की सरल रोचक भाषा शैली में शैव-वैष्णव का कलह मिटाते हुए रामचरित मानस को लिखकर आयोध्या के ही राजाराम को पूर्ण ब्रह्मा, परमात्मा बताने और सिर्फ हरिभजन को ही असली यज्ञ-पूजा बताने में यदि सफल न हो पाते तो उस समय हमें मुहम्मदी, नमाजी और कुरानी बन जाना ही पड़ता।

जिस तरह हम राष्ट्र-धर्म रक्षक चाणक्य, शंकराचार्य, गुरुगोविंद सिंह, शिवाजी, दयानन्द, विवेकानन्द, सुभाष, सावरकर, पटेल आदि के उपकारों को नहीं भुलाते, त्यों ही गीताकार और मानसकार को भी भारतीय वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु 'भारत-रत्न' पुरस्कार जैसा कुछ न कुछ अविस्मरणीय-सम्मान तो मिलना ही चाहिए। भले ही इनके बनाये ये

आज भी हम त्यागियों-परोपकारियों-सहायकों को देवदूत-फरिश्ता-भगवान कह देते हैं। इसी तरह हम अग्नि, आदित्य, वायु, अंगिरा, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, मनु, भगीरथ, परशुराम, राम, कृष्ण, व्यास, गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि आदि वैज्ञानिकों-ऋषियों को तो कह सकते हैं किंतु परमात्मा कदापि नहीं। क्योंकि वेदानुसार परमात्मा न तो जन्मता-मरता है और न किसी आकार में कभी बंधता है। उसी निराकार एक अखण्ड अनंत ब्रह्मा-ओ३म् के एक अंश से प्रकाश पा-पाकर अनेकों ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शंकरादि जन्मते-मिटते रहते हैं। यही ज्ञान प्रकाश पूर्ण सच्चिदानंद, ईश्वर, ध्यान, योग, प्रार्थना, प्राणायाम, हवन, परोपकार, सच्चाई, ज्ञान, ईमानदारी और सदाचार आदि द्वारा ही सभी मनुष्यों का परमोपास्य है। राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईशा, मूसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, दयानन्दादि भी इसी ईश्वर के उपासक रहे हैं। इन महान ऐतिहासिक ईश्वर-भक्तों को ही ईश्वर मान लेना और इनकी मूर्ति को सजीव समझ कर लड्डू, पेड़ादि खिलाने-पिलाने, सुलाने-जगाने का अभिनय करना-करवाना भारी मूर्खता या धूर्तता है।

यदि आप सफल सामाजिक जिंदगी जीने हेतु श्रीराम का सही सम्पूर्ण दर्शन करना चाहते हों तो आपको ध्यान से बाल्मीकि रामायण ही पढ़ना ही होगा। इस रामायण में कहीं नहीं लिखा है कि राम ईश्वर है, बल्कि रामजी भी ओ३म् और वेदमंत्र (ओउम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव) का जपोपासना, ध्यान, योग, प्राणायाम करने वाले सत्यवादी आर्यपुत्र ही थे। देवी कौशल्या के गर्भ से जन्म और 111 वर्ष बाद सरयू में डूबने से मृत्यु हो गयी थी। चूंकि आर्यों में किसी व्यक्ति के कृति-कीर्ति न ही याद रखी जाती थी और न ही उसकी चित्र-मूर्ति या मृत्यु-तिथि, पूर्णतिथि मनायी जाती थी, इसलिए राम की भी न कोई चित्रमूर्ति रही, न पूर्णतिथि का उल्लेख। सीता-हरण से कार्य दुखी होकर राम खुद ही लक्ष्मण से कहते हैं 'भाई, पूर्व जन्म में जरूर मुझसे कोई भारी अपकर्म हुआ होगा, जो इस जन्म में पिता की मृत्यु, भाई भरत का बिछोह और सीताहरण जैसी मार्मिम-पीड़ाएं झेलनी पड़ रही है।

साहित्यिक-हथियार आज कुछ मोर्चे पर अनुपयुक्त, अप्रासंगिक हो गये हों, तथापि सेवानिवृतों (रिटायर्डों) की भांति ये सादर पेंशन पाने के अधिकारी तो ही है। अभी के लिए 'सत्यार्थ-प्रकाश' अत्यंत अमोघ-औषधि व बुद्धिवर्धक टानिक है जो वाल्मीकि रामायण और महाभारत की तरह ही श्रीराम और श्रीकृष्ण को एक आदर्श महात्मा ही साबित करता है, परमात्मा नहीं।

50 साल पहले तक अक्सर लोग कृतिज्ञ-भावुकतावस डाक्टरों को दूसरा भगवान कह बैठते थे। आज भी हम त्यागियों-परोपकारियों-सहायकों को देवदूत-फरिश्ता-भगवान कह देते हैं। इसी तरह हम अग्नि, आदित्य, वायु, अंगिरा, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, मनु, भगीरथ, परशुराम, राम, कृष्ण, व्यास, गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि आदि वैज्ञानिकों-ऋषियों को (देव-देवी) तो कह सकते हैं किंतु परमात्मा कदापि नहीं। क्योंकि वेदानुसार परमात्मा न तो जन्मता-मरता है और न किसी आकार में कभी बंधता है। उसी निराकार एक अखण्ड अनंत ब्रह्मा-ओ३म् के एक अंश से प्रकाश पा-पाकर अनेकों ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शंकरादि जन्मते-मिटते रहते हैं। (मानस-1,141,3) यही ज्ञान प्रकाश पूर्ण सच्चिदानंद, ईश्वर, ध्यान, योग, प्रार्थना, प्राणायाम, हवन, परोपकार, सच्चाई, ज्ञान, ईमानदारी और सदाचार आदि द्वारा ही सभी मनुष्यों का परमोपास्य है। राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईशा, मूसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, दयानन्दादि भी इसी ईश्वर के उपासक रहे हैं। इन महान ऐतिहासिक ईश्वर-भक्तों को ही ईश्वर मान लेना और इनकी मूर्ति को सजीव समझ कर लड्डू, पेड़ादि खिलाने-पिलाने, सुलाने-जगाने का अभिनय करना-करवाना भारी मूर्खता या धूर्तता है। यह सिर्फ नास्तिकता ही नहीं महापुरुषों का अपमान भी है। राम-कृष्ण का मंदिर बनाकर इनको खिलाने-पहनाने हेतु भीख चंदा मांगने इन्हीं के सामने यजमानों से झूठ बोलना, तंग करना साबित करता है कि ये निडर पंडे लोग भी इन मूर्तियों को चेतन नहीं समझते। राम के प्राणप्रिय, वीर, वेदज्ञ, ब्रह्मचारी, शाकाहारी हनुमान जी को बंदरमुखी बना देने से भी इन पंडों को संतोष न हुआ, तो अब ये बाघ, गीद, गधा, सुअर के मुख लगाकर पंचमुखी-हनुमान को पुजवाने के दुस्साहस में लग गये हैं।

हमारे धार्मिक महापुरुषों के पुश्तैनी दलाल बन चुके ये पंडे लोग भलीभांति जनते हैं कि जो भगवान मीर कासिम से लेकर महमूद गजनी, मुहम्मद गौरी, सिकंदर लोधी, तैमूर लंग, औरंगजेब, काला पहाड़ का कुछ भी बिगाड़ न सका। वो मुझे क्या दंड देगा। सचमुच मंदिरों के सारे भगवान इन पंडे-पुजारियों के सारे तमाशों के मौन समर्थक ही बने रहते हैं।

हमारे प्रबुद्ध पाठकों! यदि आप विश्व मानवता के प्रेणा पुरुष श्रीराम को कृतज्ञतावश प्रणाम करने भर की रस्म निभाना चाहे, तब तो ये मंदिर स्मारक ठीक है।

किंतु यदि आप सफल सामाजिक जिंदगी जीने हेतु श्रीराम का सही सम्पूर्ण दर्शन करना चाहते हों तो आपको ध्यान से बाल्मीकि रामायण ही पढ़ना होगा। इस रामायण में कहीं नहीं लिखा है कि राम ईश्वर है, बल्कि रामजी भी ओ३म् और वेदमंत्र (ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव) का जपोपासना, ध्यान, योग, प्राणायाम करने वाले सत्यवादी आर्यपुत्र ही थे। देवी कौशल्या के गर्भ से जन्म और 111 वर्ष बाद सरयू में डूबने (जल समाधि) से मृत्यु हो गयी थी।

चूंकि आर्यों में किसी व्यक्ति के कृति-कीर्ति न (जन्मदिन पर भी) ही याद रखी जाती थी और न ही उसकी चित्र-मूर्ति या मृत्यु-तिथि, पूर्णतिथि मनायी जाती थी, इसलिए राम की भी न कोई चित्रमूर्ति रही, न पूर्णतिथि का उल्लेख। सीता-हरण से दुखी होकर राम खुद ही लक्ष्मण से कहते हैं 'भाई, पूर्व जन्म में जरूर मुझसे कोई भारी अपकर्म हुआ होगा, जो इस जन्म में पिता की मृत्यु, भाई भरत का बिछोह और सीताहरण जैसी मार्मिम-पीड़ाएं झेलनी पड़ रही है। OO

ऋग्वेद में अक्ष विषयक वर्णन

डॉ. मंजु नारंग, डी.लिट.

इस संसार में प्रत्येक कार्य के उचित अथवा अनुचित तथा उत्तम अथवा अधम दो पक्ष होते हैं। उत्तम पक्ष उन्नति अथवा श्रेष्ठता का द्योतक होता है, तद्विपरीत अधम पक्ष अवनति अथवा निकृष्टता को अभिव्यक्त करता है। किसी भी प्रकार का व्यसन निंदनीय कृत्य माना जाता है। द्यूत अथवा अक्ष क्रीडा व्यसन के अंर्तगत आते हैं। इसके प्रति आसक्ति पतनोन्मुख करने का कारण होती है। ऋग्वेद के अक्ष सूक्त में अक्ष के स्वरूप पर, अक्ष क्रीडक की मन:स्थिति का उसकी पतन की ओर ले जाने वाली निंदनीय स्थिति का तथा उसके परिवार की शोचनीय तथा दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। अक्ष क्रीडक की पत्नी, उसकी माता तथा उसके परिवार के सदस्यों की उसके प्रति तिरस्कार की भावना पर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है। अक्ष क्रीडा के दोषों पर विचार अक्ष क्रीडक की पूर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती दयनीय स्थिति पर अभिव्यक्ति के माध्यम से किया है।

ऋग्वेद के अक्ष सूक्त में प्राप्त विवरणानुसार अक्ष क्रीडक अक्ष के विषय में स्पष्ट करता है कि निम्न प्रदेश में उत्पन्न कम्पनशील अक्ष के विशाल पासे जिस समय अक्ष पट पर फेंके जाते हैं, उस समय उन पासों को देखकर उसको अत्यधिक आनंद की अनुभूति होती है। मूँजवान पर्वत पर उत्पन्न सोमलता का पान करने से जिस प्रकार की प्रसन्नता होती है, उसी प्रकार की प्रसन्नता बहेड़े के वृक्ष के काष्ठ से निर्मित अक्ष के पासे से अक्ष क्रीडक को होती है तथा वह उत्साहित होता है। अक्ष क्रीडक विचार करता है कि अक्ष क्रीडा के व्यसन से पूर्व उसकी पत्नी उसका विशेष ध्यान रखती थी तथा वह उसके प्रति अनुराग भी रखती थी। एक मात्र अक्ष के व्यसन के कारण उसकी अनुरागिणी पत्नी ने उसका परित्याग कर दिया।

अक्ष क्रीडक के संबंधी उसके अक्ष क्रीडा के व्यसन के कारण उसके साथ का परित्याग कर देते हैं तथा उसकी निंदा किया करते हैं। उसकी पत्नी भी उसका परित्याग कर देती है। अक्ष क्रीडक के द्वारा किसी से कुछ भी याचना करने पर कोई भी व्यक्ति उसको कुछ भी प्रदान नहीं करता है। अक्ष के पासों का आकर्षण अत्यधिक कष्टप्रद होता है। वृद्ध अश्व के क्रय के परित्याग करने के समान अक्ष क्रीडक को कोई भी व्यक्ति उसको सम्मान प्रदान नहीं करते हैं। अक्ष क्रीडक के माता-पिता तथा उसके सहोदर भी उसको पहचानने से अस्वीकार कर देते हैं तथा उसको पकड़ कर ले जाने के लिए कहते हैं।

अक्ष क्रीडक अपनी दुर्बल मन:स्थिति का वर्णन करता है कि जिस समय वह अक्ष क्रीडा नहीं करने का निश्चय किता है तथा अक्ष क्रीडकों के समीप्य का परित्याग भी कर देता है, किंतु जैसे ही अक्ष पर भूरे वर्ण के पासे फेंके जाते हैं, अक्ष के पासों की क्रांति से आकृष्ट होकर वह अक्ष क्रीडा के स्थान पर उसी प्रकार से पहुंच जाता है, जिस प्रकार से भ्रष्टा नारी उपपति के समीप पहुंच जाती है। अक्ष क्रीडक अक्ष क्रीडा के स्थान पर विजय की कामना से पहुंच जाता है। उसकी कामना कभी पूर्ण तथा कभी अपूर्ण रहती है। अक्ष के पासे कभी-कभी अनियंत्रित हो जाते हैं। ये अंकुश के समान चुभते हैं, बाण के समान छेदन करते हैं, छुरे के समान भेदन करते हैं तथा तप्त पदार्थ के समान संतप्त करते हैं। विजयी अक्ष क्रीडक को अक्ष के पासे पुत्र जन्म के समान आनंदित करते हैं। माधुर्य प्रदान करते हैं तथा मिष्ट वाणी में सम्भाषण करवाते हैं। किंतु पराजित अक्ष क्रीडक का तो ये पासे मानों बध ही कर देते हैं।

इस अक्ष पट पर त्रेपन गोटियां जब ऊपर की ओर विहार करती हैं, उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानों सत्यस्वरूप सूर्यदेव संसार में विचरण कर रहे हैं। अक्ष के पासे उग्रतम व्यक्ति के द्वारा भी नियंत्रित नहीं हो पाते हैं। राजा भी इनके समक्ष नतमस्तक होते हैं। ये पासे हस्तरहित होने पर भी हस्तयुक्त व्यक्तियों को परास्त कर देते हैं। ये श्री सम्पन्न होते हैं। दग्ध अंगारे के समान ये अक्ष पर आसीन होते हैं। स्पर्श करने में शीतल होने पर भी ये हृदय को दग्ध करते हैं। अक्ष क्रीडक की पत्नी यातनाओं को भोगती हैं। उसके पुत्र दूत स्वत: विचरण करते हैं। उसकी माता व्याकुल रहती है।

कैसे हो संस्कार

अखिलेश आर्येन्दु

चरक ऋषि के अनुसार-संस्कारो हि गुणांतराधानमुच्चते। इसका अर्थ यह है कि स्वयं में विद्यमान दुर्गुणों को समाप्त कर, उनके स्थान पर सद्गुणों को प्रत्यारोपित कर दें, यही संस्कार है। शास्त्रों के अनुसार, संस्कार का अर्थ परिष्कार, सुधार, शुद्धिकरण अथवा पवित्रीकरण होता है। विकारों को दूर कर सुसंस्कृत विचारों के लिए आधार भूमि तैयार करना ही संस्कार कहलाता है। संस्कार से न केवल शरीर, बल्कि मन व आत्मा भी पवित्र होता है। माता-पिता की भूमिका अनेक विचारक संस्कार को दो भागों में विभक्त करते हैं। इनमें पूर्व जन्म के संस्कार, जो पूर्णत: परमात्मा की कृपा का फल या परिणाम होते हैं। दूसरा, उत्तर जन्म के संस्कार हैं, जो मुख्यत: मनुष्य के कर्म पर ही निर्भर करते हैं।

परमात्मा ने जो संस्कार दिये हैं, उसके कारण मां, गर्भ-भ्रूण का पालन करती है। ऐसी स्थिति में मां का गर्भ पृथ्वी की तरह कार्य करता है। जहां एक ओर, जल गर्म में भ्रूण को पोषण देता है, तो वायु उसे प्राण देती है। साथ ही, अग्नि उसे तापमान देती है, तो दूसरी ओर, आकाश उसे स्वतंत्र-चिंतन देता है और मन-बुद्धि उसे अस्तित्व की पहचान देते हैं। नौ महीने के बाद जब बालक का जन्म होता है, तो यहीं से उसके उत्तर- जन्म संस्कार प्रारंभ हो जाते हैं। यह मां ही है जो अपने बच्चों में अच्छे संस्कार,, प्रवृत्तियों एवं मानवीय मूल्यां के बीज डालती है। यदि मां अपना कर्तव्य निभाने में असमर्थ हो जाती है, तो बच्चे में कुसंस्कार, कुप्रवृत्तियां और अमानवीय मूल्यों का बीजारोपण हो जाता है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती माता-पिता को सजग करते हुए उपदेश देते हैं। वे कहते हैं कि बचपन से ही संतान में न केवल सत्संग के प्रति रुचि, बल्कि अच्छी आदतें डालने का प्रयत्न भी करना चाहिए। माता-पिता कभी भी बच्चों के सामने असत्य न बोलें और न ही गलत आचरण करें। आनंदमय वातावरण आप अपने नवजात शिशु को जाने-अनजाने में प्रेम, दया, न्याय, अहिंसा, सत्य, परोपकार और करुणा आदि जैसे गुणों का पालन करने की सीख देते रहें। ध्यान रखें कि इसके लिए उसे अलग से पढ़ाने या सिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, बल्कि घर-परिवार में प्रचलित लोक कथाएं, कहावतें और प्रेरक प्रसंग ही पर्याप्त होते हैं। यह एक सहज प्रक्रिया है, जिस पर थोड़ा-सा ध्यान देकर उत्तम परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसा बालक, जिसे घर के आनंदमय वातावरण में सुसंस्कारों की धारा प्राप्त हुई हो, वह कभी भी नकारात्मक प्रवृत्ति की ओर नहीं जा पाएगा। क्योंकि मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत ऐसा बालक शीघ्र उत्तम संस्कारों को आत्मसात कर लेता है। ऐसा बालक ही आगे चलकर एक आदर्श एवं विशिष्ट व्यक्तित्व में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति ज्ञानी और विवेकशील होते हैं, जो अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए जीते हैं। अच्छे विचार संस्कार से मन, शरीर और आत्मा तीनों का शुद्धिकरण होता है। इसलिए आप जितना अधिक आदर्श विचार और संस्कार बच्चों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करेंगे, उसका सुफल भी उतना ही अधिक प्राप्त होगा। महाभारत में कौरवों-पांडवों के बचपन की कथाएं हैं। इन कथाओं से यह ज्ञात होता है कि राजकुल में भी शिशुओं को जैसे संस्कार दिए गए, वैसा ही उसका परिणाम प्राप्त हुआ।

पांडवों में प्रेम, सत्य, अहिंसा, न्याय, दया, करुणा और परोपकार जैसे मानवीय मूल्य आरोपित किये गये थे। वहीं दूसरी ओर कौरवों में इन सभी सद्गुणों का अभाव था। सच तो यह है कि जीवन के प्रारंभ से ही उन लोगों में यदि सुसंस्कार और मानवीय मूल्यों को आत्मसात कराया गया होता, तो न केवल महाभारत का महायुद्ध टल जाता, बल्कि करोड़ों लोग असमय काल-कवलित होने से बच जाते। कहने का तात्पर्य यही है कि सुसंस्कार और मानवीय मूल्य इतिहास या काल की धारा के प्रवाह को सही दिशा में मोड़ने में भी सक्षम होते हैं। यही वजह है कि हमारे वैदिक ऋषि-महर्षियों ने हम मानवों को संस्कारवान बनाने के लिए गृहसूत्रों, उपनिषदों एवं स्मृतियां की रचना की।

The Myth of the Aryan Invasion of India

Article By David Frawley

(Conti. old education)

Aryan Gods like Indra, Agni, Saraswati and the Adityas are praised as being like a city. Many ancient kings, including those of Egypt and Mesopotamia, had titles like destroyer or conqueror of cities. This does not turn them into nomads. Destruction of cities also happens in modern wars; this does not make those who do this nomads. Hence the idea of the Vedic culture as destroying but not building cities is based upon ignoring what the Vedas actually say about their own cities. Further excavations revealed that the Indus Valley culture was not destroyed by outside invasion, but according to internal causes and, most likely, floods. Most recent of new set of cities has benn found in India(like the Dwaraka and Bet Dwaraka sites by S.R. Rao and the National Institute of Oceanography in India) which are intermediate between those of the Indus culture and later ancient India as visited by the Greeks. This may eliminate the so-called dark age following the presumed Aryan invasion and shows a continuous urban occupation in India back to the beginning of the Indus culture.

The interpretation of the religious of the Indus Valley culture-made incidentally by scholars much as Wheeler who were not religious scholars much less students of Hinduism-was that its religion was different than the Vedic and more likely the later Shaivite religion. Hence it was thought by them to be a kind of early Dravidian Shaivite religion. However, further excavations-both in Indus Valley sites in Gujarat, like Lothal, and those in Rajasthan, like Kalibangan-show large number of fire altars like those used in the Vedic relighion along with bones of oxen, potsherds, shell jewelry and other item used in rituals described in the Vedic Brahmanas. Hence the Indus Valley culture evidence many Vedic practices that cannot be merely coincidental. That some of its practices appeared non-Vedic to its excavators may also be attributes to their misunderstanding or lack of knowledge of Vedic and Hindu culture generally, wherein Vedism and Shaivism are the same basic tradition.

We must remember that ruins do not necessarily have one interpretation. Nor does the ability to discover ruins necessarily gives the ability to interpret them correctly. The Vedic people were thought to have been a fair-skinned race like the Europeans owning to the Vedic idea of a war between light and darkness, and the Vedic people being presented as children of the light or children of the sun. yet this idea of a war between light and darkness exists in most ancient cultures, including the Persian and the Egyptian. Why don't we interpret their scripture as war between light and dark skinned people? It is purely a poetic metaphor, not a culture statement. Moreover, no real traces of such a race are found in India. Anthropologists have observed that the present population of Gujarat is compresent of more or less the same ethnic groups as noticed at Lothal in 2000 BC. Similarly, the present population of the Punjab is said to be ethnically the same as the population of Harappa and Rupar four thousand years ago. (Conti. to next education) OO

उसे नादान कहते हैं

बिगड़कर जो सुधर जाये, उसे विद्वान कहते हैं।
सुधरकर जो बिगड़ जाये, उसे नादान कहते है।।

अशुभ पथ पर पथि जाये, लक्ष्य को पा नहीं सकता।
सरल शुभ मार्ग न जाये, उसे नादान कहते हैं।।

करके शुभ कर्मों को, कीर्ति कर्ता ही पाता है।
अपनाये पाप कर्मों को, उसे नादान कहते हैं।।

पिये सद्ज्ञान का प्याला, वही सुख शांति को पाता।
पिये जो मद्य के प्याले, उसे नादान कहते हैं।।

भजन को 'दिव्य' चेतन का, करे वे चेतना को पाते।
समझें मूर्ति को चेतन, उसे नादान कहते हैं।।

परस्पर प्रेम से वर्ते, उन्हें सन्मित्र कहते हैं।
बढ़ाते द्वेष-हिन्सा को, उसे नादान कहते हैं।।

सभी मथ-पन्थ आपस में, एक ईश्वर को यदि मानें।
बढ़ाये क्रोध-निन्दा को, उसे नादान कहते हैं।।

➲ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

वतन क्या करे...

श्रम नहीं तो पसीने से क्या फायदा,
प्यास बिन नीर पीने से क्या फायदा
चाहतें जिसमें अपने वतन की नहीं,
जिंदगी ऐसी जीने से क्या फायदा।।

फूल ही उग्र हो तो चमन क्या करे,
चांद ही आग हो तो गगन क्या करे
मुझसे मेरे तिरंगे ने रोकर कहा,
कुर्सियां भ्रष्ट हो तो वतन क्या करे।।

➲ आर्ष गुरुकुल, नोएडा

महर्षि दयानन्द का महान चरित्र

कोई प्रभु-भक्त है तो विद्वान् नहीं,
कोई विद्वान् है तो योगी नहीं,
कोई योगी है तो सुधारक नहीं,
कोई सुधारक है तो दिलेर नहीं,
कोई दिलेर है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो वक्ता नहीं,
कोई वक्ता है तो लेखक नहीं,
कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं,
कोई सदाचारी है तो परोपकारी नहीं,
कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं,
कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देशभक्त नहीं,
कोई देशभक्त है तो वेदभक्त नहीं,
कोई वेदभक्त है तो उदार नहीं,
कोई उदार है तो शुद्धाहारी नहीं,
कोई शुद्धाहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल नहीं,
कोई सरल है तो सुन्दर नहीं,
कोई सुन्दर है तो बलिष्ठ नहीं,
कोई बलिष्ठ है तो दयालु नहीं,
कोई दयालु है तो संयमी नहीं ।।

परंतु यदि आप ये सभी गुण एक ही स्थान पर देखना चाहें तो महर्षि दयानन्द को देखो- निष्पक्ष होकर देखो ।
(सन्दर्भ ग्रन्थः दिवंगत प्रो. डॉ. कुशलदेव शास्त्री रचित 'महर्षि दयानन्दः काल और कृतित्व', पृष्ठ-423)

➲ इतिहासचार्य निरंजनदेव केसरी

फलित ज्योतिष व टोने-टोटकों के फैलते मकड़जाल से बचें

सुरेंद्र कुमार रैली
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

वैदिक साहित्य में ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष को वेद के 6 अंगों में से एक माना जाता है। वेदों में बहुत से ऐसे मंत्र विद्यमान है जिन्हें ज्योतिष की सहायता के बिना समझा ही नहीं जा सकता, परंतु यह सारा महत्व गणित ज्योतिष का है, फलित का नहीं।

यह गणित और फलित ज्योतिष का अंतर स्पष्ट करना आवश्यक है। गणित ज्योतिष वह विद्या है जिसके द्वारा सूर्य, नक्षत्र आदि से प्रकृति पर होने वाली घटनाओं का यथार्थ ज्ञान हो। जैसे सूर्य ग्रहण कब होगा? चंद्रग्रहण कब होगा? ऋतुओं का परिवर्तन कब होगा और किस प्रकार होता है, दिन घटनाओं की प्राचीनता का भी निश्चय हो सकता है। उदाहरण के रूप में जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ था, उस समय ग्रह एक युति में थे। पाश्चात्य ज्योतिर्विद-बेली के अनुसार ईसा से 3105 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट और 30 सैकंड पर एक ग्रह एक युति में थे।

अतः महाभारत का समय 3105+2000=5107 वर्ष होगा यह है ज्योतिष के अनुसार महाभारत का समय और परम्परा के अनुसार भी यही ठीक है। इस गणित ज्योतिष को हम सब मानते हैं। ➲➲

आइए तीन के अंक का महत्व बढ़ाएं

कहते हैं 'तीन तिगाड़ा, काम बिगाड़ा' अर्थात जहां तीन इकट्ठे हो जाए, वहां काम बिगड़ जाता है ऐसा सामान्यतया लोगों की धारणा बनी हुई है। वास्तव में विचार करें तो इस बात में कोई सत्यता दिखाई नहीं देती। यह तो एक अंधविश्वास है। सर्वप्रथम अपने परिवार में ही अगर तीन भाई हैं अथवा तीन बहनें हैं तो वहां पर क्या कोई कार्य पूर्ण नहीं होता? एक को अलग कर देते हैं क्या? नहीं ऐसा नहीं है, किसी कार्य को तीन बार कर लें तो क्या वह बिगड़ जाएगा? इत्यादि कई उदाहरण देखने में आते हैं। हमारे यहां तो विद्वान महापुरुषों ने ऐसा लिखा है कि ये तीन बातें सर्वदा ध्यान में रखें- 1. अपने द्वारा की गई दूसरे की बुराई 2. दूसरे द्वारा अपने लिए किया गया उपकार, 3.धन, मान-जीवन सब अनित्य है, यह सर्वदा स्मरण रहे। तीन न बनों- कृतघ्न, अहंकारी, नास्तिक। तीन बनों- नम्र, सरल, ईश्वर में विश्वासी। तीन का आश्रय मानों- ईश्वर का, आत्मा का, निरभिमानी पुरुषार्थी का। तीन बातों का निरीक्षण करें- अपने दोष, दूसरों के गुण, महात्माओं का त्यागपूर्ण आचरण।

➲ संतोष नंदवानी

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति पं." द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 25 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

जीवन को शांति सद्भाव एवं भाईचारे के साथ जीना चाहिए

महेश यादव 'संघर्षी'
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाईचारा सेवा समिति

जीवन का अर्थ है हंसी प्रेम और संबंध हम मनुष्य हैं हम अपने जीवन के छोटे-छोटे पलों तौर-तरीकों आदि को बदलते हैं हम पराजित मनुष्य नहीं है और हमारा मूल्य मुश्किल पलों के आधार पर नहीं होता जिनसे हम गुजर रहे हैं एक व्यक्ति के रूप में जो हम हैं उसका निर्माण हमारे जीवन के नकारात्मक पहलुओं से नहीं बल्कि सकारात्मक पहलुओं से होता है जीवन का लक्ष्य उत्साह और सुकून ढूंढने के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

दुख मनुष्य जीवन का एक अंग है जीवन में सुख-दुख दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। हमेशा जीवन एक जैसा नहीं रहता जीवन में परिवर्तन आते रहते हैं कभी दुख कभी सुख की अनुभूति का एहसास होता रहता है। दुख के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए उसका धैर्य के साथ मुकाबला करना चाहिए तथा सुख के समय पुरानी बातों को नहीं भूलना चाहिए हम जिस प्रकार का जीवन जी रहे हैं उसके लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। हमारे कर्ज रिश्ते हमारे अनुभव अपने सोच समझें और किए का नतीजा है समस्याओं पर लापरवाही से काम करने की बजाय अपने कामों की स्वयं जिम्मेदारी लें, अगर वह रास्ता पसंद नहीं जिस पर चल रहे हैं तो दूसरी राह बनाने की कोशिश करें।

जब हम है नहीं सोचेंगे कि हमारे पास क्या है बल्कि जो हमारे पास है हमारे अंदर है उसे प्रोत्साहित होने लगेंगे कई बार जब हम मुश्किल भरे. दौर से गुजर रहे होते हैं तो हम अपने चेहरे पर दर्द का अनुभव कर रहे होते है, मुश्किल के दौर में सफलता हमारी पहचान नहीं है, हम इससे अलग और बहुत कुछ हैं। जीवन एक बहुमूल्य है जिसको पाकर हम और आप सभी प्रसन्नचित है, खुशी भरी जिंदगी में प्रेम परिहास का आना स्वभाविक है,जिंदगी के हर पहलू पर चिंतन करने के बाद उस पर अमल करना चाहिए क्योंकि जीवन में हजारों प्रकार के उतार-चढ़ाव आते जाते रहते हैं। जीवन का निर्माण करने और खुद के वास्तविक स्वरूप को जानने में मदद करने की दृष्टि से जरूरी है लेकिन वह हमारे मूल्य का निर्धारित करने वाला कारक नहीं है, वह ऐसी चीज़ नहीं है जो हमारे व्यक्तित्व की पहचान बन जाए कई बार हम अपना रास्ता भटक जाते सही रास्ते पर चलते हुए अपने जीवन को खुशहाल बनाए रखेंगे तो किसी प्रकार की समस्या नहीं होगी।

मनुष्यों को जीवन सद्कर्म करने के लिए मिला है मनुष्य को अपने कर्तव्यों का बोध अपने माता पिता व गुरुओं सहित ईश्वर से हुआ है। मनुष्य के जीवन का प्रमुख लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति कर ईश्वरोपासना करना व सद्कर्मों को करके देश व समाज का हित व उपकार करना है मनुष्य वर्तमान एवं भविष्य के जीवन को संवारने के लिए नये कर्मों को करता है इसके साथ ही पूर्वजन्म के शुभ व अशुभ कर्मों के फलों को भोगता भी है मनुष्य को मनुष्य जीवन का लाभ उठाकर ज्ञान प्राप्ति कर सद्कर्मो, दान, परोपकार, गरीबों की सेवा आदि करनी चाहिए जिससे उनका यह जीवन सुखी हो।

जीवन को शांति सद्भाव एवं भाईचारे के साथ समाज व राष्ट्र में जीने की ओर अग्रसर होना चाहिए। अगर प्रेम शांति सद्भाव के साथ समाज में व्यवहार किया जाए तो हर मनुष्य का जीवन आनंदमय और सुखमय हो जाएगा समाज में आज के दौर में जो समस्या है वह अधिकतर परिवार व समाज में एक-दूसरे के प्रति सही व्यवहार नहीं करना है।

लोग जाति धर्म मजहब आदि को लेकर समाज में जो दूरियां बढ़ रही है, उसका जिम्मेदार हमारा अपना समाज है जबकि हम प्रकृति की तरफ गौर करें तो प्रकृति से हम सब को सीख लेनी चाहिए सूर्य से रोशनी, पेड़ों से ऑक्सीजन व धूप आदा किसी एक धर्म जाति मजहब को नहीं देती बल्कि बिना किसी भेदभाव के प्रदान करती है इसलिए हम सभी मानव जाति को प्रकृति से सीख लेनी चाहिए अपने जीवन को उदासी के त्याग कर खुशी भरी जिंदगी जीनी चाहिए। दुनिया में वास्तव में प्यार शांति सद्भाव एवं भाईचारे के साथ जीना चाहिए यही मानव का सच्चा कर्म है और धर्म है। ○○

समाचार - सूचनाएं

- 1 मार्च को महर्षि दयानन्द गोसंवर्धन केंद्र, गाजीपुर, दिल्ली में महाशय धर्मपाल आर्य की अध्यक्षता में भव्य 195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के पश्चात सभा का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी का मुख्य उद्‌बोधन हुआ। सभी द्वारा महर्षि के समाज के प्रति किए उपकारों, सुधारों का भावपूर्ण स्मरण किया व आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए आह्वान किया। गौशाला की उन्नति के लिए जनता से सहयोग की अपील की गई कि तभी गौमाता की जय का नारा सार्थक होगा। भव्य ऋषि लंगर की व्यवस्था श्री जय भगवान अग्रवाल सुप्रसिद्ध समाजसेवी द्वारा की गई। सभा को अनेक आर्यों ने अपनी उपस्थिति से सफल बनाया। अनेक महानुभावों को सम्मानित किया गया।
- 1 मार्च केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जी का 195वां जन्मोत्सव श्रीमती मीनाक्षी लेखी के निवास पर हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसे अनेक समाजों के आर्यों द्वारा सफल बनाया गया। महर्षि का भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 4 मार्च को रामलीला मैदान में शिवरात्रि के अवसर पर भव्य कार्यक्रम में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया। जिसे दिल्ली की समस्त समाजों के सहयोग से सफल बनाया गया। ऋषि लंगर का विशेष प्रबंध रहा। विद्वानों, संन्यासियों द्वारा ऋषि बोधोत्सव पर समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास को दूर करने का आह्वान किया गया।
- 20 मार्च को आर्य पारिवारिक होली मिलन मंगल समारोह दिल्ली में मनाया गया। कार्यक्रम बड़ा ही सुंदर रहा।
- 26 मार्च को आर्यजगत के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी का जन्मोत्सव तालकटोरा ऑडीटोरियम में भव्यता के साथ मनाया गया। पद्म विभूषण से सम्मानित होने पर उन्हें संस्थाओं की ओर से बधाइयां प्रदान की गई।
- 30 मार्च को रौल्ट एक्ट के विरुद्ध स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा आंदोलन किये गये की 100वीं जयंती के अवसर पर भव्य समारोह टाउन हॉल, दिल्ली में आयोजित हुआ, जिसमें भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।
- आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल नोएडा में 'एक शाम रणबाकुरों के नाम' देश के वीर शहीदों को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री नमिता नमन, विशिष्ठ अतिथि प्रदीप जैनी वास्तु गुरु, कुशल संयोजन वीर गोरखपुरी द्वारा किया गया। सभी का श्री प्रदीप जैनी द्वारा स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। वैदिक विद्वान श्री करण शास्त्री, डॉ.जयेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य, मधु भसीन, श्रीमती ओमवती, सरला कालरा, लक्ष्मी सिन्हा, राज सरदाना, मनोहर लाल सरदाना, संतोष लाल, अन्नपूर्णा धवन, ओमकार शास्त्री, कैलाश, उमा शंकर शास्त्री, विक्रम आर्य, आर्य कै. अशोक गुलाटी, श्री आर.एल. लवानिया, शिव कुमार, राकेश कुमार तिवारीव ब्रह्मचारियों द्वारा उपस्थिति से कवि सम्मेलन को गरिमा प्रदान की। कवियों द्वारा बेहतरीन काव्य पाठ से रणबाकुरों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। कवि सम्मेलन की सूत्रधार सुप्रद्ध कवित्री नमिता नमन रहीं।
- 6 अप्रैल को कमानी ऑडीटोरियम में आर्य केंद्रीय सभा की ओर से नवसंवत्सर के अवसर पर स्थापना दिवस होगा।

लेखकों से अपील : अपनी रचना, लेख, कविता आदि भेजते समय ध्यान रखें कि लिखावट साफ-सुथरी हो व लेख कागज के एक ओर हाशिया छोड़ते हुए लिखें। लेख के हर पृष्ठ पर नम्बर व हस्ताक्षर करें, साथ ही 5 रुपये की डाक टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूले अन्यथा लेख, रचना लौटा पाना संभव नहीं हो पाएगा। अपना पूरा नाम, फोन, पता अवश्य लिखें। सभी लेख, रचना प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' आर्य समाज भवन, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेजें।

पाठकों से अपील : आर्य समाज.नोएडा की यह पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' आपको कैसी लगी, इसके बारे में अपने विचार प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेजें। आपकी प्रतिक्रिया से ही हमें सम्बल मिलेगा तथा हम पत्रिका को और उपयोगी बनाने का प्रयास करेंगे। हमें आपके पत्रों का बेसब्री से इन्तजार रहेगा।

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

।। ओ३म् ।।

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा

आर्य समाज नोएडा का प्रकल्प

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल में नवीन सत्र 2019-20 के लिए अप्रैल 2019 में प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद, लखनऊ एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बन्धित होगा। आवासीय गुरुकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, खेलकूद तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था।

प्रवेश शुल्क : 5100/- रु.

भोजन शुल्क : 1500/- रु. प्रतिमाह

शिक्षा निःशुल्क

विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

सम्पर्क सूत्र : 0120-2505731, 9899349304, 9871798221

लिखित परीक्षा : 30 अप्रैल 2019, प्रातः - 10 बजे

पिछली पास कक्षा का व आयु का प्रमाण पत्र, 2 फोटो साथ लाएं

सिफारिश को अयोग्यता माना जायेगा

साक्षात्कार लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण होने पर होगा

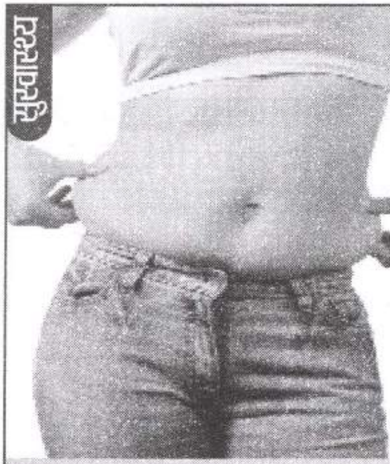

दालचीनी कम करेगी पेट पर जमी वसा

शरीर को फिट रखने के लिए रोज की कसरत बहुत ही जरूरी है। हमारे देश में लोग तब ध्यान देते हैं जब उनका ओवर वेट होने लगता है या पेट पर ज्यादा फैट जमने लगता है। ऐसे में आपको अपने पेट की वसा कम करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और नतीजा कोई खास नजर नहीं आता। तब आपका मन खिन्न होने लगता है और आप परेशान होने लगते हैं। समस्या वास्तव में पेट के आसपास जमा फैट की है जिसकी वजह से पेट बाहर निकलने लगता है। इससे छुटकारा पाना वाकई काफी मुश्किल काम है। यह समस्या सिर्फ अधिक वजन वालों में ही नहीं है बल्कि सामान्य वजन वाले लोगों का भी कई कारणों से पेट निकलने लगता है। उम्र बढ़ना और ज्यादा खाने और खराब लाइफस्टाइल की वजह से भी यह समस्या उत्पन्न हो सकती है।

- आपका पेट ज्यादा निकला है तो आपको डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और गॉल ब्लैडर की समस्या हो सकती है
- दालचीनी में ऐसे गुण पाए जाते हैं जिससे आपको अपने पेट की वसा को गलाने में आसानी होगी
- दालचीनी में 'पॉलीफिनोल' नामक एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जो आपकी वसा और गुलूकोज को कम करता है

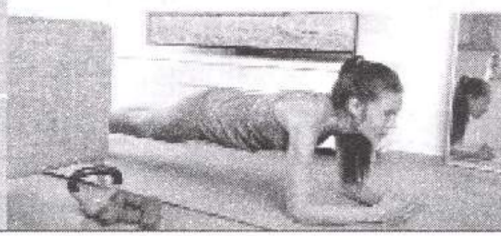

कैसे हो सकता है कम

- **दालचीनी :** दालचीनी में ऐसे गुण पाए जाते हैं जिससे आपको अपने पेट की वसा को गलाने में आसानी होगी। दालचीनी में 'पॉलीफिनोल' नामक एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जो हमारे शरीर में इंसुलिन के सैंसिटिविटी को बेहतर करता है। ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने का मतलब यह है कि हमारे शरीर में अतिरिक्त ग्लूकोज की मात्रा नहीं होती जो तुरंत फैट में नहीं बदल पाता है और इसकी वजह से शरीर में फैट नहीं जमता।
- **रोज चेंज करें कसरत :** रोजाना एक ही तरह की कसरत करने से उसका उतना बेहतर परिणाम नहीं मिलता है। रूटीन में रोजाना अलग-अलग कसरत शामिल करने से फैट कम करने में मदद मिलती है।
- **चाय-कॉफी :** चाय, कॉफी या ताजे जूस में रोजाना दालचीनी मिलाकर पीने से आपका फैटी पेट तेजी से कम हो सकता है।
- **उम्र :** जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है हार्मोंस की एक्टिविटी में भी बदलाव आने लगता है जिससे पेट की वसा को कम करना बहुत कठिन होने लगता है।
- **भोजन पर नियंत्रण :** पेट की वसा कम करने के लिए सबसे पहले आपको अपने भोजन पर नियंत्रण करना होगा। सही खाना खाने से पेट के पास जमा फैट कम हो सकता है।
- **शहद-नींबू में :** जल्दी फर्क देखने के लिए रोजाना सुबह गुनगुने पानी में एक चम्मच शहद, नींबू का रस और एक चम्मच दालचीनी पॉवडर मिलाकर पीएं।

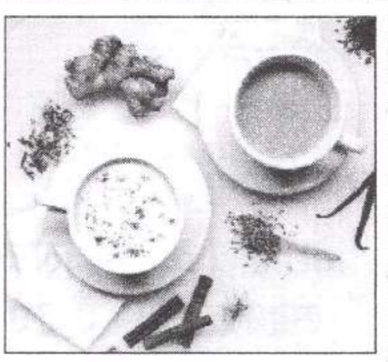

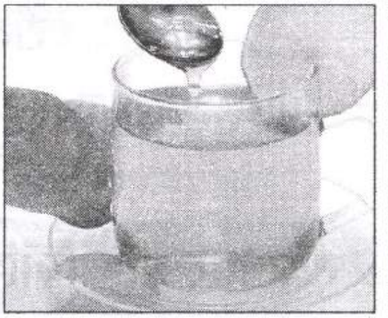

भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों में डॉ. जयेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल नोएडा द्वारा यज्ञ व प्रवचन, साथ में संन्यासी वृन्द व वेदपाठी।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974U Date of Dispatch 12&13 Every Month

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहीदी दिवस समारोह में मुख्य अतिथि साध्वी प्राची द्वारा सम्मानित होते हुए आर्य कै. अशोक गुलाटी। कार्यक्रम में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पोते, चंद्रशेखर आजाद के भतीजे पं. सुदीप आजाद व पोते अमित आजाद भी उपस्थित थे। सुरेश पंचाल वैदिक द्वारा शहीदों को बड़े ही भावपूर्ण ओजस्वी गीतों द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

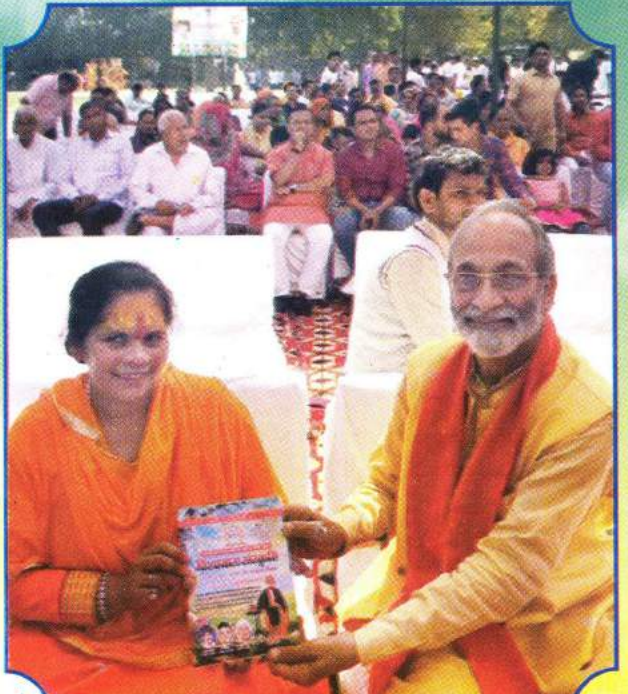

साध्वी प्राची समाजसेविका को 'विश्ववारा संस्कृति' का मार्च अंक प्रदान करते हुए प्रबंध संपादक आर्य कै. अशोक गुलाटी।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में एक शाम रणबाकुरों ने नाम कवि सम्मेलन में डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा प्रस्तुति साथ में कविगण।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221